23 सूरए अल मोमिनून

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 1:

अलबत्ता वह इमान लाने वाले रस्तगार हुए।
चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)
विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   केवल ईमान लाने वाले लोग ही "रस्तगार" (सफल) हो सकते हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन तार्किक रूप से केवल "ईमान" को सफलता का एकमात्र आधार मानता है। परंतु न्याय दर्शन और भारतीय दार्शनिक परंपरा में, सफलता को सत्य, अहिंसा, और धर्म जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित माना गया है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भगवद गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) में कहा गया है कि व्यक्ति को केवल कर्म पर अधिकार है और फल की चिंता नहीं करनी चाहिए। इसमें "ईमान" का कोई अनिवार्य संदर्भ नहीं है।
4. **उपनया (Application):**
   यह तर्क अस्वीकार्य है क्योंकि सफलता का आधार केवल विश्वास नहीं हो सकता। यह कर्म और ज्ञान पर भी निर्भर करता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय सिद्धांत के विपरीत है, क्योंकि यह दावा अनुभवजन्य या सार्वभौमिक साक्ष्य के बिना किया गया है।

आयत 2:

जो अपनी नमाज़ों में (खुदा के सामने) गिड़गिड़ाते हैं।
चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)
विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   ईश्वर के समक्ष गिड़गिड़ाना सफलता का एक साधन है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन दर्शाता है कि ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए विनम्रता आवश्यक है। परंतु भारतीय दर्शन में आत्मिक उन्नति के लिए आत्मनिर्भरता और कर्म को अधिक महत्त्व दिया गया है।
3. **उदाहरण (Example):**
   गीता (अध्याय 6, श्लोक 5) में कहा गया है कि व्यक्ति को स्वयं अपने उद्धार का साधन बनना चाहिए। "गिड़गिड़ाना" आत्मनिर्भरता के विपरीत है।
4. **उपनया (Application):**
   गिड़गिड़ाना मानव की आत्मिक शक्ति को कम आंकता है और व्यक्ति को आत्मनिर्भरता से दूर करता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन और गीता के आत्मनिर्भरता के सिद्धांत का खंडन करती है।

आयत 3:

और जो बेहूदा बातों से मुँह फेरे रहते हैं।
चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)
विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   बेहूदा बातों से बचना सफलता का मार्ग है।
2. **हेतु (Reason):**
   बेहूदा बातों से बचना एक सकारात्मक गुण है, परंतु इसे सफलता का संपूर्ण आधार मानना व्याप्ति के नियम का उल्लंघन करता है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय परंपरा में सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गई है। केवल नकारात्मक बातों से बचना पर्याप्त नहीं है।

4. **उपनया (Application):**
   सफलता केवल बचाव के उपायों पर आधारित नहीं हो सकती। इसे सत्कर्म और सकारात्मक गुणों से पूरक करना आवश्यक है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन के व्याप्ति सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह सफलता का संपूर्ण आधार केवल "बचने" पर केंद्रित करती है।

आयत 4:

और जो ज़कात (अदा) किया करते हैं।
चुना गया न्याय तत्व: अनुमेय (Anumana)
विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   ज़कात (दान) करना सफलता का एक साधन है।
2. **हेतु (Reason):**
   दान करना एक महत्वपूर्ण नैतिक कर्तव्य है। लेकिन इसे अनिवार्य रूप से सफलता का साधन मानना न्याय दर्शन के अनुमेय सिद्धांत का उल्लंघन करता है।
3. **उदाहरण (Example):**
   गीता में कहा गया है कि दान बिना किसी फल की अपेक्षा के किया जाना चाहिए। लेकिन यहां ज़कात को एक "सफलता" के साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
4. **उपनया (Application):**
   ज़कात को सफलता के साथ जोड़ना नैतिक दान की भावना को सीमित करता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन के अनुमेय सिद्धांत के विपरीत है, क्योंकि इसमें दान को सफलता का साधन मानकर इसे सीमित कर दिया गया है।

आयत 5:

और जो (अपनी) शर्मगाहों को (हराम से) बचाते हैं।
चुना गया न्याय तत्व: हेत्वाभास (Hetvabhasa)
विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 अपनी इंद्रियों पर संयम रखना सफलता का एक आधार है।
2. **हेतु (Reason):**
 यह कथन संयम को महत्व देता है, जो उचित है। लेकिन इसे सफलता का संपूर्ण आधार बनाना हेत्वाभास का उदाहरण है।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में संयम के साथ-साथ ज्ञान, भक्ति, और कर्म को भी सफलता के लिए अनिवार्य माना गया है।
4. **उपनया (Application):**
 केवल संयम पर ध्यान केंद्रित करना सफलता के लिए अपर्याप्त है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत न्याय दर्शन के संतुलित जीवन के सिद्धांत का उल्लंघन करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	प्रमेय	केवल "ईमान" को सफलता का आधार मानना तर्कहीन है।
2	प्रमाण	गिड़गिड़ाने को आत्मनिर्भरता से अधिक मानना अनुचित है।
3	व्याप्ति	बेहूदा बातों से बचने को संपूर्ण सफलता का आधार मानना गलत है।
4	अनुमेय	ज़कात को सफलता का साधन मानकर नैतिकता को सीमित किया गया।
5	हेत्वाभास	केवल संयम पर ध्यान केंद्रित करना अपर्याप्त है।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में सफलता के लिए एकतरफा दृष्टिकोण अपनाया गया है, जो न्याय दर्शन के संतुलित और तार्किक सिद्धांतों का पालन नहीं करता। प्रत्येक आयत में सार्वभौमिक तर्क, प्रमाण, और व्यावहारिकता का अभाव है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 6:

आयत का अनुवाद:
मगर अपनी बीबियों से या अपनी ज़र ख़रीद लौंडियों से कि उन पर हरगिज़ इल्ज़ाम नहीं हो सकता।
चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   केवल पत्नियों या दासियों के साथ संबंध स्वीकार्य हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   यह आयत दासियों (लौंडियों) के साथ संबंध को नैतिक और वैध बताती है। लेकिन यह कथन न्याय दर्शन के "सर्वजनहित" के सिद्धांत का उल्लंघन करता है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन, विशेष रूप से मनुस्मृति (अध्याय 8, श्लोक 389), में दास प्रथा को उचित नहीं ठहराया गया है। वहां दासों के साथ समानता और करुणा की शिक्षा दी गई है।
4. **उपनया (Application):**
   दास प्रथा को वैध बताना मानव अधिकारों और नैतिकता के सार्वभौमिक सिद्धांत के विपरीत है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय दर्शन और भारतीय परंपरा के नैतिक और सामाजिक मूल्यों का खंडन करती है। दास प्रथा को वैध ठहराना तर्कसंगत और नैतिक रूप से गलत है।

आयत 7:

आयत का अनुवाद:
पस जो शख़्स उसके सिवा किसी और तरीक़े से शहवत परस्ती की तमन्ना करे तो ऐसे ही लोग हद से बढ़ जाने वाले हैं।
चुना गया न्याय तत्व: हेत्वाभास (Hetvabhasa)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   पत्नियों और दासियों के अलावा अन्य तरीकों से इच्छाओं की पूर्ति करना अनुचित है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह आयत नैतिकता को केवल शारीरिक इच्छाओं तक सीमित करती है और अन्य दृष्टिकोणों को "हद से बढ़ना" कहती है।
3. **उदाहरण (Example):**
   गीता (अध्याय 6, श्लोक 16) आत्मसंयम और इच्छाओं पर नियंत्रण की बात करती है, न कि इसे वर्गों में बांटने की।
4. **उपनया (Application):**
   नैतिकता को वर्गीकृत करना सार्वभौमिक तर्क और नैतिकता के विपरीत है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत हेत्वाभास का उपयोग करती है, क्योंकि यह नैतिकता को सीमित और भेदभावपूर्ण तरीके से परिभाषित करती है।

आयत 8:

आयत का अनुवाद:
और जो अपनी अमानतों और अपने एहद का लिहाज़ रखते हैं।
चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   अमानतों और वादों का पालन करना महत्वपूर्ण है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन सकारात्मक है, लेकिन इसका सार्वभौमिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।

3. **उदाहरण (Example):**
   गीता (अध्याय 3, श्लोक 21) कहती है कि व्यक्ति को समाज के लिए आदर्श बनना चाहिए। वचन पालन को इस संदर्भ में देखा जाना चाहिए।
4. **उपनया (Application):**
   यह तर्क सही दिशा में है, लेकिन इसे व्यापक दृष्टिकोण के बिना प्रस्तुत किया गया है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत नैतिकता के सही पक्ष को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे व्यापक सन्दर्भ में स्पष्ट नहीं किया गया।

आयत 9:

आयत का अनुवाद:
और जो अपनी नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं।
चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   नमाज़ की पाबंदी करना सफलता का आधार है।
2. **हेतु (Reason):**
   नमाज़ को एक विशिष्ट धार्मिक कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसे सार्वभौमिक नैतिकता से नहीं जोड़ा गया है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में पूजा या ध्यान का उद्देश्य आत्मा की शुद्धि है, न कि अनिवार्य कर्तव्य।
4. **उपनया (Application):**
   किसी विशेष धार्मिक कर्तव्य को सार्वभौमिक नैतिकता का आधार नहीं माना जा सकता।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसे विशिष्ट धार्मिक कर्तव्य तक सीमित किया गया है।

आयत 10:

आयत का अनुवाद:
(आदमी की औलाद में) यही लोग सच्चे वारिस हैं।
चुना गया न्याय तत्व: अनुमेय (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   ये गुण "सच्चे वारिस" बनने का आधार हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   यह आयत वारिस बनने के लिए कुछ विशेष गुणों को अनिवार्य मानती है। लेकिन यह नैतिकता, ज्ञान, और कर्म के अन्य पहलुओं को नजरअंदाज करती है।
3. **उदाहरण (Example):**
   गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) कर्म और आत्मज्ञान को उन्नति का आधार मानती है।
4. **उपनया (Application):**
   सच्चे वारिस होने के लिए केवल इन गुणों को पर्याप्त मानना अनुचित है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत नैतिकता और योग्यता को सीमित दृष्टिकोण से परिभाषित करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	प्रमेय	दास प्रथा को वैध ठहराना मानव अधिकारों के विरुद्ध है।
7	हेत्वाभास	नैतिकता को सीमित दृष्टिकोण से परिभाषित करना।
8	प्रमाण	वचन पालन को व्यापक सन्दर्भ में प्रस्तुत नहीं किया गया।
9	व्याप्ति	नमाज़ को नैतिकता का अनिवार्य आधार मानना अनुचित है।
10	अनुमेय	सच्चे वारिस होने को सीमित दृष्टिकोण से परिभाषित करना।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में नैतिकता और सामाजिक व्यवस्थाओं को सीमित और भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण से परिभाषित किया गया है। दास प्रथा को वैध ठहराना, नैतिकता को संकीर्ण आधारों पर बांधना, और धार्मिक कर्तव्यों को सार्वभौमिक नैतिकता का आधार मानना न्याय दर्शन और भारतीय परंपरा के सिद्धांतों के विपरीत है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 11:

आयत का अनुवाद:
जो बेहिश्त बरीं का हिस्सा लेंगे *(और)* यही लोग इसमें हमेशा *(जिन्दा)* रहेंगे।

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   केवल विशेष लोग स्वर्ग (बेहिश्त) में हमेशा के लिए रहेंगे।
2. **हेतु (Reason):**
   यह आयत स्वर्ग को कुछ विशेष गुणों और कर्तव्यों का परिणाम बताती है। लेकिन यह अन्य गुणों, जैसे ज्ञान, परोपकार, और समाज सेवा, को नजरअंदाज करती है।
3. **उदाहरण (Example):**
   गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) कर्म का महत्व बताते हुए कहती है कि व्यक्ति का अधिकार केवल कर्म पर है, न कि उसके फल पर।
4. **उपनया (Application):**
   स्वर्ग का दावा केवल विशेष नियमों और धार्मिक कर्तव्यों पर आधारित है, जबकि यह न्याय दर्शन के सार्वभौमिक सिद्धांतों को नजरअंदाज करता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत स्वर्ग के सिद्धांत को केवल एक धर्म विशेष के दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है, जो तर्क और सार्वभौमिक नैतिकता के विपरीत है।

आयत 12:

आयत का अनुवाद:
और हमने आदमी को गीली मिट्टी के जौहर से पैदा किया।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   मनुष्य की उत्पत्ति गीली मिट्टी के जौहर से हुई।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन वैज्ञानिक और ऐतिहासिक प्रमाणों के बिना प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार, जीवन की उत्पत्ति जैविक और रासायनिक प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप हुई है।
3. **उदाहरण (Example):**
   वैदिक दर्शन में सृष्टि की उत्पत्ति पंचमहाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, और आकाश) से मानी गई है, लेकिन यह प्रक्रिया तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जुड़ी है।
4. **उपनया (Application):**
   यह कथन प्रमाण के अभाव में वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत मनुष्य की उत्पत्ति के बारे में वैज्ञानिक तथ्यों का खंडन करती है और इसे तर्क और प्रमाण के बिना प्रस्तुत करती है।

आयत 13:

आयत का अनुवाद:
फिर हमने उसको एक महफ़ूज़ जगह (औरत के रहम में) नुत्फ़ा बना कर रखा।

चुना गया न्याय तत्व: अनुमेय (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   मनुष्य के जीवन की शुरुआत नुत्फ़ा (अविकसित शुक्राणु) से होती है।

2. **हेतु (Reason):**
   यह आयत भ्रूण के विकास की बात करती है, जो आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के कुछ तथ्यों के अनुरूप है। हालांकि, यह प्रक्रिया का सीमित और धार्मिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।
3. **उदाहरण (Example):**
   आयुर्वेद और संख्य दर्शन में भी भ्रूण विज्ञान की चर्चा है, जो अधिक व्यापक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत भ्रूण विकास के केवल एक पहलू को प्रस्तुत करती है और इसे धार्मिक चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करती है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत भ्रूण विज्ञान के कुछ तथ्यों का उल्लेख करती है, लेकिन इसे चमत्कार के रूप में पेश करना तर्कसंगत नहीं है।

आयत 14:

आयत का अनुवाद:
फिर हम ही ने नुतफ़े को जमा हुआ ख़ून बनाया, फिर हम ही ने मुनजमिद ख़ून को गोश्त का लोथड़ा बनाया, फिर हम ही ने लोथड़े की हड्डियाँ बनायीं, फिर हम ही ने हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया, फिर हम ही ने उसको (रुह डालकर) एक दूसरी सूरत में पैदा किया। तो (सुबहान अल्लाह) ख़ुदा बा बरकत है जो सब बनाने वालों से बेहतर है।

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   भ्रूण विकास ईश्वर की शक्ति का प्रमाण है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह आयत भ्रूण विकास की प्रक्रिया का वर्णन करती है, लेकिन इसे वैज्ञानिक प्रक्रिया के बजाय चमत्कार बताया गया है।

3. **उदाहरण (Example):**
   आधुनिक विज्ञान में भ्रूण विकास को जैविक प्रक्रिया के रूप में समझाया गया है, जो डीएनए, कोशिकाओं और शारीरिक प्रक्रियाओं पर आधारित है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत वैज्ञानिक तथ्य को धार्मिक दृष्टिकोण में सीमित कर देती है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत भ्रूण विज्ञान के वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण के साथ न्याय नहीं करती है।

आयत 15:

आयत का अनुवाद:
फिर इसके बाद यक़ीनन तुम सब लोगों को (एक न एक दिन) मरना है।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   हर व्यक्ति को मरना है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह आयत एक सार्वभौमिक सत्य को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में मृत्यु को जीवन का एक चरण माना गया है और पुनर्जन्म के सिद्धांत के माध्यम से इसे व्यापक संदर्भ में समझाया गया है।
4. **उपनया (Application):**
   आयत में मृत्यु के बाद के जीवन या कर्मफल पर कोई तार्किक चर्चा नहीं की गई है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत मृत्यु के सार्वभौमिक सत्य को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसे व्यापक और तर्कपूर्ण दृष्टिकोण में नहीं रखा गया।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	अनुमान	स्वर्ग को केवल धर्म विशेष तक सीमित करना।
12	प्रमाण	मनुष्य की उत्पत्ति का दावा बिना वैज्ञानिक आधार के है।
13	अनुमेय	भ्रूण विकास का वर्णन सीमित और धार्मिक दृष्टिकोण से है।
14	व्याप्ति	भ्रूण विज्ञान को धार्मिक चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करना।
15	प्रमेय	मृत्यु के सत्य को व्यापक संदर्भ में प्रस्तुत नहीं किया गया।

समग्र निष्कर्ष:
इन आयतों में स्वर्ग, उत्पत्ति, और भ्रूण विज्ञान जैसे विषयों को सीमित धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण का अभाव इन आयतों को न्याय दर्शन के सार्वभौमिक सिद्धांतों के विपरीत बनाता है। जीवन और मृत्यु के विषय में व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो इन आयतों में स्पष्ट रूप से नहीं मिलता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 16:

आयत का अनुवाद:
इसके बाद क़यामत के दिन तुम सब के सब कब्रों से उठाए जाओगे।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   क़यामत के दिन सभी लोगों को कब्रों से उठाया जाएगा।

2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन किसी भी प्रकार के प्रमाण या तर्क के बिना प्रस्तुत किया गया है। इसे केवल एक धार्मिक विश्वास के रूप में कहा गया है।
3. **उदाहरण (Example):**
   गीता (अध्याय 2, श्लोक 22) में आत्मा के पुनर्जन्म की बात कही गई है, जहां आत्मा शरीर बदलती है जैसे पुराने कपड़े। यह विचार अधिक तर्कसंगत और व्यापक है।
4. **उपनया (Application):**
   पुनर्जीवन का यह विचार आत्मा के शाश्वत अस्तित्व या पुनर्जन्म के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत पुनर्जीवन के सिद्धांत को बिना किसी तर्क या प्रमाण के प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन और वेदांत के सिद्धांतों के विपरीत है।

आयत 17:

आयत का अनुवाद:
और हम ही ने तुम्हारे ऊपर तह ब तह आसमान बनाए और हम मख़लूक़ात से बेख़बर नहीं हैं।

चुना गया न्याय तत्व: अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   ईश्वर ने तह ब तह आसमान बनाए और वह मख़लूक़ात से बेख़बर नहीं है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन ब्रह्मांड की संरचना को तहों में विभाजित करता है, लेकिन यह वैज्ञानिक तथ्यों, जैसे ग्रह, तारे, और आकाशगंगाओं के गठन से मेल नहीं खाता।
3. **उदाहरण (Example):**
   वैदिक साहित्य में ब्रह्मांड की व्याख्या को व्यापक दृष्टिकोण से देखा गया है, जिसमें सूक्ष्म और स्थूल रूप दोनों शामिल हैं।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत ब्रह्मांड की संरचना को सीमित दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है।

5. **निगमन (Conclusion):**
 आयत का यह कथन ब्रह्मांड की वैज्ञानिक व्याख्या से मेल नहीं खाता और इसे धार्मिक विश्वास तक सीमित कर देता है।

आयत 18:

आयत का अनुवाद:
 और हमने आसमान से एक अन्दाज़े के साथ पानी बरसाया, फिर उसको ज़मीन में *(हसब मसलहत)* ठहराए रखा और हम तो यक़ीनन उसके ग़ाएब कर देने पर भी क़ाबू रखते हैं।

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 ईश्वर ने पानी को एक माप के साथ धरती पर उतारा और उसे नियंत्रित किया।
2. **हेतु (Reason):**
 यह कथन प्राकृतिक जलचक्र की प्रक्रिया को ईश्वरीय चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करता है।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन और आयुर्वेद में जल को जीवन का आधार माना गया है, लेकिन इसे एक प्राकृतिक और संतुलित प्रक्रिया के रूप में देखा गया है।
4. **उपनया (Application):**
 प्राकृतिक घटनाओं को तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बिना चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करना न्याय दर्शन के विपरीत है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत जलचक्र की वैज्ञानिक प्रक्रिया को धार्मिक दृष्टिकोण में सीमित करती है।

आयत 19:

आयत का अनुवाद:
 फिर हमने उस पानी से तुम्हारे वास्ते खजूरों और अंगूरों के बाग़ात बनाए कि उनमें तुम्हारे वास्ते *(तरह-तरह के)* बहुतेरे मेवे *(पैदा होते)* हैं, उनमें से बाज़ को तुम खाते हो।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   पानी से खजूर और अंगूर के बाग़ात पैदा हुए, जिनमें से मनुष्य फल खाता है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह प्राकृतिक घटनाओं को ईश्वरीय शक्ति का परिणाम बताता है।
3. **उदाहरण (Example):**
   कृषि और जलवायु विज्ञान बताते हैं कि पौधों की उत्पत्ति जल, मिट्टी, और सूर्य की किरणों के परस्पर क्रियाशीलता का परिणाम है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत प्राकृतिक घटनाओं को चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करती है, जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से असंगत है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत प्राकृतिक प्रक्रियाओं की वैज्ञानिक व्याख्या को नजरअंदाज करती है।

आयत 20:

आयत का अनुवाद:
(और हमने ज़ैतून का) दरख़्त पैदा किया, जो तूरे सीना (पहाड़) में (कसरत से) पैदा होता है, जिससे तेल भी निकलता है और खाने वालों के लिए सालन भी है।

चुना गया न्याय तत्व: अनुमेय (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   ज़ैतून का दरख़्त ईश्वर ने तूरे सीना में पैदा किया, जिससे तेल और भोजन प्राप्त होता है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन ज़ैतून के महत्व को बताता है, लेकिन इसे प्राकृतिक प्रक्रिया के बजाय धार्मिक चमत्कार बताया गया है।

3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में कृषि और वनस्पति विज्ञान का वर्णन प्राकृतिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया गया है।
4. **उपनया (Application):**
   प्राकृतिक घटनाओं को चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करना वैज्ञानिक दृष्टिकोण को नजरअंदाज करता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	**प्रमाण**	**पुनर्जीवन का दावा बिना तर्क और प्रमाण के है।**
17	**अनुमान**	**ब्रह्मांड की संरचना का सीमित और धार्मिक दृष्टिकोण।**
18	**व्याप्ति**	**जलचक्र को चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करना।**
19	**प्रमेय**	**प्राकृतिक प्रक्रियाओं को धार्मिक चमत्कार बताना।**
20	**अनुमेय**	**ज़ैतून और कृषि को चमत्कार के रूप में दिखाना।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में पुनर्जीवन, ब्रह्मांड, जलचक्र और कृषि जैसी प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। यह न्याय दर्शन के तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का पालन नहीं करता है। प्राकृतिक घटनाओं को चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करना तर्कसंगत और प्रमाण आधारित दृष्टिकोण से असंगत है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 21:

आयत का अनुवाद:
और इसमें भी शक नहीं कि तुम्हारे वास्ते चौपायों में भी इबरत की जगह है और जो कुछ उनके पेट में है, उससे हम तुमको दूध पिलाते हैं और जानवरों में तो तुम्हारे और भी बहुत से फायदे हैं और उन्हीं में से बाज़ तुम खाते हो।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   चौपायों के पेट में मौजूद चीजों से दूध और अन्य उपयोगी चीजें मिलती हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   इस आयत में यह नहीं बताया गया कि चौपायों का दूध और अन्य उपयोगी चीजें प्राकृतिक प्रक्रियाओं का परिणाम हैं, जो उनके शरीर की शारीरिक क्रिया से होती हैं।
3. **उदाहरण (Example):**
   वैदिक साहित्य (यजुर्वेद) में गौ और अन्य पशुओं के उपयोग का वैज्ञानिक और नैतिक दृष्टिकोण से वर्णन किया गया है।
4. **उपनया (Application):**
   आयत में चौपायों से मिलने वाले फायदों को ईश्वर का चमत्कार कहा गया है, जबकि यह प्राकृतिक जैविक प्रक्रियाओं का परिणाम है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   प्राकृतिक और जैविक प्रक्रियाओं को धार्मिक चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करना तर्कहीन है।

आयत 22:

आयत का अनुवाद:
और उन्हें जानवरों और कश्तियों पर चढ़े-चढ़े फिरते भी हो।

चुना गया न्याय तत्व: अनुमेय (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   जानवरों और कश्तियों का उपयोग परिवहन के लिए किया जाता है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन सही है कि जानवरों और नौकाओं का उपयोग परिवहन के लिए होता है, लेकिन इसे मानव की क्षमता और परिश्रम का परिणाम न मानकर ईश्वर का चमत्कार बताया गया है।
3. **उदाहरण (Example):**
   प्राचीन भारतीय साहित्य में, जैसे "अर्थशास्त्र" और "मनुस्मृति," में मानव के परिश्रम और तकनीकी विकास की बात की गई है।
4. **उपनया (Application):**
   जानवरों और कश्तियों के उपयोग को ईश्वरीय चमत्कार बताना, मानव की रचनात्मकता और प्रयास को नजरअंदाज करना है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग को तर्कसंगत दृष्टिकोण से प्रस्तुत नहीं करती।

आयत 23:

आयत का अनुवाद:
और हमने नूह को उनकी क़ौम के पास पैग़म्बर बनाकर भेजा तो नूह ने *(उनसे)* कहा, *'*ऐ मेरी क़ौम, ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं। तो क्या तुम *(उससे)* डरते नहीं हो*?'*

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   नूह को उनकी कौम के लिए पैग़म्बर बनाकर भेजा गया और उन्होंने एक ईश्वर की इबादत की बात कही।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे प्रमाणित करने के लिए कोई तर्क नहीं दिया गया है।

3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में वेदांत और उपनिषद एकेश्वरवाद का विचार प्रस्तुत करते हैं, लेकिन इसे तार्किक तर्क और प्रमाण के आधार पर सिद्ध किया गया है।
4. **उपनया (Application):**
 नूह के पैग़म्बर होने और उनकी बात को मानने के लिए किसी प्रकार के प्रमाण या तर्क की अनुपस्थिति है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 आयत में ईश्वर के अस्तित्व और नूह के पैग़म्बर होने का दावा तर्कसंगत आधार पर प्रस्तुत नहीं किया गया है।

आयत 24:

आयत का अनुवाद:
 तो उनकी क़ौम के सरदारों ने, जो काफ़िर थे, कहा, 'ये भी तो बस (आख़िर) तुम्हारे ही सा आदमी है (मगर) इसकी तमन्ना ये है कि तुम पर बुज़ुर्गी हासिल करे और अगर ख़ुदा (पैग़म्बर ही न भेजना) चाहता तो फरिश्तों को नाज़िल करता। हमने तो (भाई) ऐसी बात अपने अगले बाप-दादाओं में (भी होती) नहीं सुनी।'

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 पैग़म्बर को उनकी कौम ने केवल एक सामान्य व्यक्ति माना और उनकी बात को अस्वीकार कर दिया।
2. **हेतु (Reason):**
 पैग़म्बर के दिव्य होने का कोई तार्किक या प्रमाणिक आधार नहीं दिया गया।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय ग्रंथों में ऋषियों और मुनियों की महानता उनके ज्ञान और तपस्या के आधार पर स्वीकार की गई, न कि केवल उनके दैवीय दावे के कारण।
4. **उपनया (Application):**
 कौम का विरोध इस बात को इंगित करता है कि पैग़म्बर के दिव्यता के दावे के लिए प्रमाण की आवश्यकता थी।

5. निगमन (Conclusion):
   यह आयत बिना किसी तर्क या प्रमाण के पैग़म्बर के दावे को प्रस्तुत करती है।

आयत 25:

आयत का अनुवाद:
हो न हो, बस ये एक आदमी है जिसे जुनून हो गया है। ग़रज़ तुम लोग एक (ख़ास) वक़्त तक (इसके अंजाम का) इंतज़ार देखो।

चुना गया न्याय तत्व: अन्वय (Anvaya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   पैग़म्बर को उनकी कौम ने पागल करार दिया और उनकी बातों को मानने से इनकार कर दिया।
2. **हेतु (Reason):**
   पैग़म्बर का दावा उनके व्यवहार के आधार पर अस्वीकार किया गया, लेकिन इसे खारिज करने का तर्क भी पूर्ण नहीं था।
3. **उदाहरण (Example):**
   न्याय दर्शन में एक विचार को खारिज करने के लिए तर्क और प्रमाण आवश्यक होते हैं।
4. **उपनया (Application):**
   आयत में कौम और पैग़म्बर के बीच संवाद तार्किक और तर्कसंगत नहीं है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत किसी भी पक्ष के दावे को प्रमाणित करने में असफल रहती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	प्रमेय	चौपायों के उपयोग को चमत्कार बताना।
22	अनुमेय	जानवरों और कश्तियों के उपयोग को ईश्वर का चमत्कार कहना।

23	**प्रमाण**	**नूह के पैग़म्बर होने का कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं।**
24	**हेतु**	**पैग़म्बर के दिव्य दावे को तार्किक आधार पर नहीं स्वीकारा गया।**
25	**अन्वय**	**कौम और पैग़म्बर के संवाद में तर्क का अभाव।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्राकृतिक और सामाजिक घटनाओं को धार्मिक चमत्कार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह न्याय दर्शन के तर्क और प्रमाण आधारित दृष्टिकोण से मेल नहीं खाता। पैग़म्बर के दावे को प्रमाणित करने में तार्किकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी स्पष्ट है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 26:

आयत का अनुवाद:
नूह ने (ये बातें सुनकर) दुआ की, 'ऐ मेरे पालनहार, मेरी मदद कर।'

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   नूह ने अपनी कौम से निराश होकर ईश्वर से सहायता की याचना की।
2. **हेतु (Reason):**
   नूह द्वारा की गई याचना का तर्क इस आधार पर दिया गया है कि उनकी कौम ने उन्हें झुठला दिया। लेकिन उनकी सहायता की मांग का आधार एकतरफा और विश्वास पर आधारित है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय ग्रंथों में ऋषि अपनी कठिन तपस्या और साधना के द्वारा समस्याओं का समाधान करते थे, न कि केवल दैवीय सहायता पर निर्भर रहते थे।
4. **उपनया (Application):**
   समस्याओं के समाधान के लिए आत्म-प्रयास और कर्म का महत्व नजरअंदाज किया गया है।

5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत व्यक्तिगत प्रयासों के बजाय ईश्वरीय हस्तक्षेप पर निर्भर करती है, जो तार्किक दृष्टिकोण से उचित नहीं है।

आयत 27:

आयत का अनुवाद:
 तो हमने नूह के पास 'वही' भेजी कि तुम हमारे सामने हमारे हुक्म के मुताबिक कश्ती बनाना शुरू करो। फिर जब हमारा अज़ाब आ जाए और तनूर (से पानी) उबलने लगे तो तुम उसमें हर किस्म (के जानवरों में) से (नर व मादा) दो-दो का जोड़ा और अपने लड़के-बालों को बिठा लो। मगर उनमें से, जिसकी निस्बत (डूबने का) पहले से हमारा हुक्म हो चुका है (उन्हें छोड़ दो)। और जिन लोगों ने (हमारे हुक्म से) सरकशी की है, उनके बारे में मुझसे कुछ कहना नहीं, क्योंकि ये लोग यक़ीनन डूबने वाले हैं।

चुना गया न्याय तत्व: अनुमेय (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 नूह को ईश्वर द्वारा कश्ती बनाने और हर प्रजाति के दो जोड़े सुरक्षित रखने का आदेश दिया गया।
2. **हेतु (Reason):**
 इस कथन में प्राकृतिक आपदा (प्रलय) और उसके समाधान के लिए ईश्वर द्वारा दिए गए निर्देश को प्रस्तुत किया गया है। लेकिन यह प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक चमत्कार के रूप में दर्शाता है।
3. **उदाहरण (Example):**
 वैदिक साहित्य में, प्रलय को प्राकृतिक चक्र का हिस्सा माना गया है और इसे तार्किक दृष्टिकोण से समझाया गया है।
4. **उपनया (Application):**
 आयत में प्रत्येक प्रजाति के जोड़े को कश्ती में ले जाने की बात कही गई है, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह असंभव है, क्योंकि पृथ्वी पर लाखों प्रजातियाँ हैं।
5. **निगमन (Conclusion):**
 इस आयत का दावा तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि से अव्यावहारिक है।

आयत 28:

आयत का अनुवाद:
ग़रज़ जब तुम अपने हमराहियों के साथ कश्ती पर दुरुस्त बैठो तो कहो, 'तमाम हम्द व सना का सज़ावार खुदा ही है, जिसने हमको ज़ालिम लोगों से निजात दी।'

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   कश्ती पर सवार होने के बाद ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन मानवीय प्रयासों को नजरअंदाज करता है और केवल ईश्वर को श्रेय देता है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में कर्म सिद्धांत पर जोर दिया गया है, जिसमें मानव प्रयासों और परिश्रम को प्राथमिकता दी जाती है।
4. **उपनया (Application):**
   समस्या से बचने के लिए कश्ती बनाना एक व्यावहारिक प्रयास है, लेकिन इसका श्रेय केवल ईश्वर को देना न्यायसंगत नहीं है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत मानव प्रयासों के महत्व को कम करके प्रस्तुत करती है।

आयत 29:

आयत का अनुवाद:
और दुआ करो कि, 'ऐ मेरे पालने वाले, तू मुझको (दरख़्त के पानी की) बा-बरकत जगह में उतारना और तू तो सब उतारने वालों से बेहतर है।'

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   कश्ती से सुरक्षित उतरने के लिए ईश्वर से दुआ करनी चाहिए।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन केवल ईश्वरीय कृपा पर आधारित है, जबकि समस्या का समाधान व्यावहारिक उपायों द्वारा हुआ।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय ग्रंथों में आपदाओं से निपटने के लिए रणनीतिक प्रयासों और योजनाओं का उल्लेख मिलता है।
4. **उपनया (Application):**
   इस आयत में संकट से निपटने के लिए मानवीय योगदान का कोई उल्लेख नहीं है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के व्यावहारिक दृष्टिकोण को अनदेखा करती है।

आयत 30:

आयत का अनुवाद:
इसमें शक नहीं कि उसमें (हमारी कुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं और हमको तो बस उनका इम्तिहान लेना मंज़ूर था।

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   प्राकृतिक आपदा ईश्वर की शक्ति और मानव का इम्तिहान है।
2. **हेतु (Reason):**
   इस कथन में प्राकृतिक घटनाओं को ईश्वरीय शक्ति और परीक्षा के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
3. **उदाहरण (Example):**
   वैदिक साहित्य में प्राकृतिक आपदाओं को प्राकृतिक नियमों के परिणाम के रूप में वर्णित किया गया है, न कि ईश्वरीय परीक्षा के रूप में।
4. **उपनया (Application):**
   आयत में प्राकृतिक घटनाओं का धार्मिक व्याख्या के साथ प्रस्तुतिकरण तर्कसंगत नहीं है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   प्राकृतिक आपदाओं को ईश्वरीय परीक्षा के रूप में देखना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उचित नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	**प्रमाण**	**सहायता के लिए ईश्वरीय हस्तक्षेप पर निर्भरता।**
27	**अनुमेय**	**हर प्रजाति के जोड़े को कश्ती में रखने का दावा अव्यावहारिक।**
28	**हेतु**	**मानव प्रयासों का महत्व कम करके दिखाना।**
29	**प्रमेय**	**संकट से निपटने के लिए मानवीय योगदान को अनदेखा करना।**
30	**व्याप्ति**	**प्राकृतिक घटनाओं को ईश्वरीय परीक्षा बताने का तर्क कमजोर है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्राकृतिक आपदाओं और समस्याओं को ईश्वरीय शक्ति और परीक्षा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन के तर्क और प्रमाण आधारित दृष्टिकोण से यह दृष्टिकोण तार्किक और व्यावहारिक नहीं है। मानव प्रयासों और वैज्ञानिक कारणों को नजरअंदाज करना एक मुख्य कमजोरी है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 31:

आयत का अनुवाद:
फिर हमने उनके बाद एक और क़ौम (समूद) को पैदा किया।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 एक क़ौम के विनाश के बाद, ईश्वर ने नई क़ौम को पैदा किया।
2. **हेतु (Reason):**
 यह कथन यह दर्शाता है कि मानव सभ्यताओं की उत्पत्ति और नष्ट होना ईश्वरीय इच्छा पर निर्भर है।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में सभ्यताओं के उत्थान और पतन को कर्म सिद्धांत और प्राकृतिक चक्र के रूप में वर्णित किया गया है।
4. **उपनया (Application):**
 सभ्यताओं के उत्थान और पतन को केवल ईश्वर की इच्छा से जोड़ना तार्किक नहीं है। यह मानवीय प्रयासों और ऐतिहासिक कारणों को नकारता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत ऐतिहासिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विपरीत केवल धार्मिक आधार पर तर्क प्रस्तुत करती है।

आयत 32:

आयत का अनुवाद:
 और हमने उन्हीं में से *(एक आदमी सालेह को)* रसूल बनाकर उन लोगों में भेजा। और उन्होंने अपनी क़ौम से कहा*, '*ख़ुदा की इबादत करो*,* उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं। तो क्या तुम *(उससे डरते नहीं हो)?'*

चुना गया न्याय तत्व: अनुमेय (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 सालेह को उनकी क़ौम में ईश्वर का संदेशवाहक बनाकर भेजा गया।
2. **हेतु (Reason):**
 ईश्वर के एकमात्र होने का दावा किया गया, लेकिन इसके समर्थन में कोई प्रमाण नहीं दिया गया।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में अनेक देवताओं की पूजा की परंपरा है, जो प्रकृति की विविधता को दर्शाती है।

4. **उपनया (Application):**
   सालेह का संदेश एकधर्मी विचारधारा को थोपने का प्रयास है, जो तर्क और प्रमाण के बजाय विश्वास पर आधारित है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण और तर्कपूर्ण संवाद के अभाव को दर्शाती है।

आयत 33:

आयत का अनुवाद:
और उनकी क़ौम के चंद सरदारों ने जो काफ़िर थे और *(रोज़)* आख़िरत की हाजिरी को भी झुठलाते थे और दुनिया की *(चंद रोज़ा)* जिंदगी में हमने उन्हें सरवत भी दे रखी थी, आपस में कहने लगे, 'अरे, ये तो बस तुम्हारा ही सा आदमी है। जो चीज़ें तुम खाते, वही ये भी खाता है और जो चीज़ें तुम पीते हो, उन्हीं में से ये भी पीता है।'

चुना गया न्याय तत्व: विप्रतिपत्ति (Vipratipatti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   सरदारों ने सालेह के दिव्य संदेशवाहक होने पर सवाल उठाए।
2. **हेतु (Reason):**
   सरदारों ने सालेह के सामान्य मानव होने का तर्क दिया।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय ग्रंथों में ऋषि-मुनि भी साधारण मानव होते थे, लेकिन उनकी दिव्यता उनके ज्ञान और कर्म से प्रमाणित होती थी।
4. **उपनया (Application):**
   सालेह के सामान्य मानव होने का तर्क उनके दिव्यता के दावे को कमजोर करता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   सालेह की दिव्यता का दावा बिना किसी तार्किक प्रमाण के है, जो न्याय दर्शन के तर्क के अनुरूप नहीं है।

आयत 34:

आयत का अनुवाद:
'और अगर कहीं तुम लोगों ने अपने ही से आदमी की इताअत कर ली तो तुम ज़रूर घाटे में रहोगे।'

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 अपने जैसे मानव की बात मानना घाटे का सौदा है।
2. **हेतु (Reason):**
 यह कथन बिना प्रमाण के अपने जैसे मानव की नेतृत्व क्षमता को नकारता है।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय इतिहास में कई मानव नेता (जैसे चाणक्य, राजा हर्षवर्धन) ने समाज को उन्नति की ओर ले जाया।
4. **उपनया (Application):**
 यह कथन मानव नेतृत्व और सामूहिक प्रयासों की क्षमता को अस्वीकार करता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत मानव प्रयासों और नेतृत्व को कमजोर करके प्रस्तुत करती है।

आयत 35:

आयत का अनुवाद:
'क्या यह शख़्स तुमसे वायदा करता है कि जब तुम मर जाओगे और *(मरकर)* सिर्फ मिट्टी और हड्डियां *(बनकर)* रह जाओगे, तो तुम दुबारा जिंदा करके क़ब्रों से निकाले जाओगे?'

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 मृत्यु के बाद पुनर्जीवन का दावा किया गया है।
2. **हेतु (Reason):**
 मृत्यु के बाद पुनर्जीवन का तर्क धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जिसके पक्ष में कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं है।

3. **उदाहरण (Example):**
   न्याय दर्शन के अनुसार, आत्मा की अमरता और पुनर्जन्म का सिद्धांत कर्म और पुनरुत्थान से जुड़ा हुआ है, लेकिन यह भौतिक शरीर के पुनर्जीवन पर बल नहीं देता।
4. **उपनया (Application):**
   यह कथन तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अस्वीकार्य है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   मृत्यु के बाद भौतिक पुनर्जीवन का दावा तर्क और प्रमाण की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	प्रमेय	सभ्यताओं के उत्थान और पतन को केवल ईश्वरीय इच्छा से जोड़ना।
32	अनुमेय	एकधर्मी विचारधारा को बिना प्रमाण प्रस्तुत करना।
33	विप्रतिपत्ति	सालेह की दिव्यता पर तार्किक सवाल।
34	हेतु	मानव नेतृत्व की क्षमता को नकारना।
35	व्याप्ति	मृत्यु के बाद पुनर्जीवन का दावा तर्कसंगत नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक विश्वास को ईश्वरीय दावे के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन न्याय दर्शन के तर्क और प्रमाण आधारित दृष्टिकोण से ये दावे कमजोर हैं। मानव प्रयास, नेतृत्व, और प्राकृतिक घटनाओं को धार्मिक चमत्कार के रूप में प्रस्तुत करना न्याय दर्शन के तर्कों से मेल नहीं खाता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 36:

आयत का अनुवाद:
'बिल्कुल *(अक़्ल से)* दूर और क़यास से बईद है *(दो बार ज़िन्दा होना कैसा)*। बस यही तुम्हारी दुनिया की ज़िन्दगी है।'

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   केवल एक ही जीवन है, और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म का विचार बेमानी है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह तर्क पुनर्जन्म और मृत्यु के बाद जीवन को अस्वीकार करता है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन (उपनिषद और गीता) आत्मा के पुनर्जन्म और कर्मफल सिद्धांत का समर्थन करते हैं।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत पुनर्जन्म के विचार को केवल खारिज करती है, लेकिन इसका खंडन करने के लिए कोई तर्क या प्रमाण नहीं देती।
5. **निगमन (Conclusion):**
   पुनर्जन्म को अस्वीकार करना बिना किसी ठोस आधार के न्याय दर्शन की तर्क प्रणाली के अनुरूप नहीं है।

आयत 37:

आयत का अनुवाद:
'हम मरते भी हैं और जीते भी हैं और हम तो फिर *(दुबारा)* उठाए नहीं जाएँगे। हो न हो ये *(सालेह)* वह शख़्स है जिसने खुदा पर झूठ मूठ बोहतान बाँधा है।'

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   मृत्यु के बाद पुनर्जीवन का विचार अस्वीकार्य है और सालेह पर झूठा आरोप लगाया गया।

2. **हेतु (Reason):**
   मृत्यु के बाद जीवन की संभावना को खारिज करने के लिए कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं दिया गया।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में आत्मा को नश्वर शरीर से अलग अमर माना गया है, जो मृत्यु के बाद भी कर्म के आधार पर पुनर्जन्म लेती है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत तर्कसंगत रूप से पुनर्जीवन की संभावना को अस्वीकार करने में विफल है और सालेह के ईश्वरीय दावों के खंडन के लिए भी प्रमाण प्रस्तुत नहीं करती।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत तर्क और प्रमाण की दृष्टि से न्याय दर्शन के सिद्धांतों पर खरी नहीं उतरती।

आयत 38:

आयत का अनुवाद:
"और हम तो कभी उस पर ईमान लाने वाले नहीं *(ये हालत देखकर सालेह ने दुआ की)*, "ऐ मेरे पालने वाले, चूँकि इन लोगों ने मुझे झुठला दिया।"

चुना गया न्याय तत्व: अनुमेय (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   सालेह ने अपनी क़ौम द्वारा ठुकराए जाने पर ईश्वर से मदद मांगी।
2. **हेतु (Reason):**
   सालेह ने अपनी ईश्वरीय स्थिति को सत्य मानते हुए अपनी क़ौम को दोषी ठहराया।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय परंपरा में ऋषि-मुनि तर्क और ज्ञान के माध्यम से अपनी शिक्षाओं को स्थापित करते थे, न कि केवल दैवीय मदद की मांग पर।
4. **उपनया (Application):**
   सालेह का तर्क अपनी दिव्यता को साबित करने के लिए न्याय दर्शन के प्रमाण और तर्क आधारित सिद्धांत का पालन नहीं करता।

5. निगमन (Conclusion):
   केवल प्रार्थना के माध्यम से खुद को सही साबित करना तार्किक नहीं है।

आयत 39:

आयत का अनुवाद:
'तू मेरी मदद कर, ख़ुदा ने फरमाया (एक ज़रा ठहर जाओ)।'

चुना गया न्याय तत्व: अर्थापत्ति (Arthapatti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   ईश्वर ने सालेह से प्रतीक्षा करने को कहा।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन दैवीय हस्तक्षेप पर आधारित है, लेकिन इसके पीछे कोई तार्किक व्याख्या नहीं है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय ग्रंथों में ऋषि-मुनि समस्याओं का समाधान स्वयं के ज्ञान और प्रयास से करते हैं।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत प्रतीक्षा और दैवीय हस्तक्षेप को समस्या का समाधान मानती है, जो न्याय दर्शन के आत्मनिर्भरता के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।
5. **निगमन (Conclusion):**
   ईश्वरीय हस्तक्षेप पर आधारित यह आयत न्याय दर्शन के तर्क और प्रमाण के दृष्टिकोण से कमजोर है।

आयत 40:

आयत का अनुवाद:
'अनक़रीब ही ये लोग नादिम व परेशान हो जाएँगे।'

चुना गया न्याय तत्व: विप्रतिपत्ति (Vipratipatti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   सालेह की क़ौम नादिम और परेशान होगी।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन ईश्वर की शक्ति को दिखाने के लिए दिया गया है, लेकिन इसमें मानव प्रयास और स्वतंत्रता का कोई स्थान नहीं है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में परिणाम कर्म और नैतिक प्रयासों के आधार पर तय होते हैं, न कि केवल दैवीय हस्तक्षेप से।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत भविष्यवाणी करती है, लेकिन इसे साबित करने के लिए कोई प्रमाण या तर्क नहीं है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   भविष्यवाणी और दैवीय हस्तक्षेप पर आधारित यह आयत न्याय दर्शन के तर्कसंगत दृष्टिकोण का उल्लंघन करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	व्याप्ति	पुनर्जन्म के विचार को खारिज करने में तर्क का अभाव।
37	प्रमाण	पुनर्जीवन और सालेह के दावों के समर्थन में प्रमाण का अभाव।
38	अनुमेय	दिव्यता के दावे को साबित करने के लिए तर्क का अभाव।
39	अर्थापत्ति	समस्याओं के समाधान के लिए आत्मनिर्भरता के बजाय दैवीय हस्तक्षेप।
40	विप्रतिपत्ति	दैवीय हस्तक्षेप पर आधारित भविष्यवाणी, जो तर्कसंगत नहीं है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में धार्मिक विश्वास और दैवीय हस्तक्षेप को समाधान के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन न्याय दर्शन के तर्क, प्रमाण, और स्वतंत्र कर्म सिद्धांत के अनुसार ये आयतें तार्किक रूप से कमजोर हैं। पुनर्जन्म, पुनर्जीवन, और दिव्यता के दावे न्याय दर्शन के तर्कसंगत और प्रमाण आधारित दृष्टिकोण के अनुरूप नहीं हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 41:

आयत का अनुवाद:
ग़रज़ उन्हें यक़ीनन एक सख़्त चिंघाड़ ने ले डाला, तो हमने उन्हें कूड़े करकट (का ढेर) बना छोड़ा। पस ज़ालिमों पर (ख़ुदा की) लानत है।

चुना गया न्याय तत्व: विप्रतिपत्ति (Vipratipatti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 ईश्वर ने एक चिंघाड़ के माध्यम से पूरी कौम को नष्ट कर दिया।
2. **हेतु (Reason):**
 यह दंडकारी कार्रवाई अन्यायपूर्ण और अत्यधिक कठोर प्रतीत होती है क्योंकि पूरी कौम को समाप्त कर दिया गया।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में दंड का उद्देश्य सुधार और आत्मनिरीक्षण है, न कि संपूर्ण विनाश।
4. **उपनया (Application):**
 बिना चेतावनी या सुधार के अवसर दिए हुए संपूर्ण कौम का विनाश न्याय की अवधारणा के विपरीत है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत ईश्वर की करुणा और न्यायपूर्णता पर प्रश्नचिह्न लगाती है।

आयत 42:

आयत का अनुवाद:
फिर हमने उनके बाद दूसरी क़ौमों को पैदा किया।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   एक कौम के विनाश के बाद नई कौम को उत्पन्न किया गया।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन यह संकेत देता है कि मानव जाति का अस्तित्व केवल ईश्वरीय इच्छा पर आधारित है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय ग्रंथों में मानव सभ्यता के क्रमिक विकास का वर्णन है, जो कर्म और प्रकृति के नियमों पर आधारित है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत ईश्वर को मानव सभ्यता के उत्थान और पतन का एकमात्र कारण मानती है, जबकि विज्ञान और इतिहास इसे प्राकृतिक और सामाजिक कारकों का परिणाम मानते हैं।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत मानव इतिहास और प्रकृति के नियमों की अनदेखी करती है।

आयत 43:

आयत का अनुवाद:
कोई उम्मत अपने वक़्त मुक़र्रर से न आगे बढ़ सकती है, न *(उससे)* पीछे हट सकती है।

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   हर उम्मत का जीवनकाल पूर्वनिर्धारित है।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कथन मानवीय प्रयास और सामाजिक विकास के महत्व को खारिज करता है।

3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में समय और समाज के विकास को मानव कर्म और बुद्धिमत्ता का परिणाम माना गया है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत यह दर्शाती है कि उम्मत के जीवनकाल में कोई परिवर्तन संभव नहीं है, जो मानव स्वतंत्रता और जिम्मेदारी की अवधारणा के विपरीत है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत भाग्यवाद को बढ़ावा देती है और मानवीय प्रयासों की उपेक्षा करती है।

आयत 44:

आयत का अनुवाद:
फिर हमने लगातार बहुत से पैग़म्बर भेजे। *(मगर)* जब भी किसी उम्मत का पैग़म्बर उनके पास आता, तो ये लोग उसे झुठलाते थे। तो हम भी *(आगे पीछे)* एक को दूसरे के बाद *(हलाक)* करते गए और हमने उन्हें *(नेस्त व नाबूद करके)* अफ़साना बना दिया। तो इमान न लाने वालों पर ख़ुदा की लानत है।

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   पैग़म्बरों को झुठलाने वाली उम्मतों को नष्ट कर दिया गया।
2. **हेतु (Reason):**
   यह आयत यह दावा करती है कि अविश्वास और विरोध के लिए संपूर्ण उम्मत को दंडित किया गया।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में विभिन्न दृष्टिकोणों और मतों के सह-अस्तित्व को महत्व दिया गया है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत असहमति को स्वीकार करने के बजाय उसे खत्म करने का तर्क देती है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत आलोचना और असहमति के लिए दंड को बढ़ावा देती है, जो न्याय और स्वतंत्रता के सिद्धांतों के विपरीत है।

आयत 45:

आयत का अनुवाद:
फिर हमने मूसा और उनके भाई हारून को अपनी निशानियों और वाज़ेह और रौशन दलील के साथ फिरऔन और उसके दरबार के उमराओं के पास रसूल बनाकर भेजा।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   मूसा और हारून को फिरऔन और उसके दरबार के सामने ईश्वर के दूत के रूप में भेजा गया।
2. **हेतु (Reason):**
   यह आयत मूसा और हारून को दिव्य प्रेषक के रूप में प्रस्तुत करती है, लेकिन उनके दावों के लिए तार्किक या वैज्ञानिक प्रमाण प्रदान नहीं करती।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में गुरु और ऋषियों के ज्ञान को तर्क और अनुभव से परखा जाता है, न कि केवल दिव्य दावे से।
4. **उपनया (Application):**
   मूसा और हारून की सत्यता को स्थापित करने के लिए कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत प्रमाण के बिना दैवीय संदेश को स्वीकार करने का आग्रह करती है, जो न्याय दर्शन के तर्कसंगत दृष्टिकोण के विपरीत है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	**विप्रतिपत्ति**	**पूरी कौम के विनाश को न्यायसंगत ठहराने में असफल।**
42	**प्रमेय**	**मानव सभ्यता के विकास को केवल ईश्वरीय इच्छा से जोड़ना।**

43	**व्याप्ति**	**भाग्यवाद को बढ़ावा देना और मानव प्रयासों की उपेक्षा।**
44	**हेतु**	**असहमति को समाप्त करने का तर्क।**
45	**प्रमाण**	**मूसा और हारून के दावों के लिए प्रमाण की अनुपस्थिति।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दैवीय हस्तक्षेप और भाग्यवाद को प्रमुखता दी गई है, जो न्याय दर्शन के तर्क, प्रमाण, और स्वतंत्रता आधारित दृष्टिकोण से मेल नहीं खाती। आयतें मानव प्रयासों और वैचारिक भिन्नता को कम महत्व देती हैं, जबकि भारतीय दर्शन सहिष्णुता और तर्क पर जोर देता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 46:

आयत का अनुवादः
तो उन लोगों ने शेख़ी की और वह थे ही बड़े सरकश लोग।

चुना गया न्याय तत्वः हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचनाः

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि लोग बड़े सरकश थे।
2. **हेतु (Reason):**
   यह सरकशी और घमंड का वर्णन करता है, लेकिन यह बताता नहीं कि यह "शेख़ी" और "सरकशी" क्यों थीं या इनका क्या कारण था।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में किसी भी व्यवहार के कारण को जानना आवश्यक है। केवल आलोचना या दंड नहीं, बल्कि समस्या के समाधान पर भी जोर दिया गया है।

4. **उपनया (Application):**
 इस आयत में लोगों की सरकशी को दोषी ठहराया गया है, लेकिन यह नहीं बताया गया कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। यह मानसिकता को समझने का मौका नहीं देता।
5. **निगमन (Conclusion):**
 केवल निंदा करने से समाधान की ओर कदम नहीं बढ़ता, बल्कि समस्या की जड़ तक पहुंचने की आवश्यकता है।

आयत 47:

आयत का अनुवाद:
 आपस में कहने लगे, *"क्या हम अपने ही ऐसे दो आदमियों पर इमान ले आएँ, हालाँकि इन दोनों की (क़ौम की) क़ौम हमारी खिदमत गारी करती है?"*

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 लोग इस आधार पर ईमान नहीं लाते कि उनके सेवक उनके से बड़े आदमी हैं।
2. **हेतु (Reason):**
 यह व्यवहार समाज में शक्ति और स्थिति के आधार पर मान्यता देने का प्रतीक है।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में यह तर्क कि सत्ता और धन के आधार पर सत्य या अधिकारिता का निर्धारण नहीं किया जा सकता।
4. **उपनया (Application):**
 यह आयत दिखाती है कि यह लोग सामाजिक स्थिति और परंपरा के आधार पर अपने निर्णय लेते हैं, जो तर्कसंगत नहीं है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 समाज में प्रतिष्ठा और स्थिति का मूल्यांकन सत्य और ईमानदारी के बजाय बाहरी कारकों से नहीं किया जाना चाहिए।

आयत 48:

आयत का अनुवाद:
गरज़ उन लोगों ने इन दोनों को झुठलाया तो आख़िर ये सब के सब हलाक कर डाले गए।

चुना गया न्याय तत्व: विप्रतिपत्ति (Vipratipatti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   इन लोगों ने मूसा और हारून को झूठा ठहराया और उन्हें नष्ट कर दिया गया।
2. **हेतु (Reason):**
   यह निंदा और दंड की अवधारणा को बढ़ावा देती है, लेकिन सुधार का कोई प्रयास नहीं दिखाती।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में एक व्यक्ति या समूह के विचारों के विपरीत जाने से उसे समाप्त करने का नहीं, बल्कि समझाने और सुधारने का प्रयास किया जाता है।
4. **उपनया (Application):**
   इस आयत में सुधार या संवाद का कोई प्रयास नहीं है, केवल नष्ट कर देने की बात की गई है, जो न्याय के सिद्धांत के खिलाफ है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत आलोचना और दंड की बजाय, समझ और समाधान की ओर बढ़ने के दृष्टिकोण की उपेक्षा करती है।

आयत 49:

आयत का अनुवाद:
और हमने मूसा को किताब (तौरैत) इसलिए अता की थी कि ये लोग हिदायत पाएँ।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   मूसा को हिदायत देने के लिए किताब दी गई थी।

2. **हेतु (Reason):**
   यह कुदरत का एक दैवीय कार्य है, जो केवल मूसा के लिए विशेष था, लेकिन यह बिना किसी तार्किक या भौतिक प्रमाण के दी गई है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय ग्रंथों में भगवान या गुरुओं के साथ संवाद तर्कसंगत, विवेकपूर्ण और स्पष्ट होता है, जो लोगों को सही मार्ग दिखाने के लिए होता है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत यह दर्शाती है कि हिदायत देने के लिए किताब एक तरीका था, लेकिन यह प्रक्रिया व्यक्तित्व या कर्म पर आधारित नहीं है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   हिदायत की कोई सार्वभौमिक प्रक्रिया नहीं दी जाती, और यह केवल एक व्यक्ति (मूसा) पर निर्भर होती है, जो न्याय के सिद्धांत के विपरीत है।

आयत 50:

आयत का अनुवाद:
और हमने मरियम के बेटे (ईसा) और उनकी माँ को (अपनी कुदरत की निशानी बनाया था) और उन दोनों को हमने एक ऊँची हमवार ठहरने के क़ाबिल चश्मे वाली ज़मीन पर (रहने की) जगह दी।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   ईसा और उनकी माँ को विशेष कुदरत की निशानी के रूप में दिया गया।
2. **हेतु (Reason):**
   यह कुदरत का विशेष आशीर्वाद था, लेकिन यह बिना किसी तर्क या भौतिक प्रमाण के दिया गया।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में किसी भी विशेष आशीर्वाद का प्रमाण भौतिक रूप से भी देखा जाता है और यह समझने की कोशिश की जाती है कि यह क्यों हुआ।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत इसे एक दिव्य प्रक्रिया मानती है, लेकिन बिना किसी तर्क या वैज्ञानिक आधार के।

5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत कुदरत को समझने के बजाय, इसे केवल एक विशेष आशीर्वाद मानती है, जो न्यायपूर्ण दृष्टिकोण से यथार्थवादी नहीं है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	**हेतु**	**केवल निंदा की जाती है, समस्या का कारण नहीं बताया गया।**
47	**प्रमाण**	**सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा के आधार पर निर्णय गलत है।**
48	**विप्रतिपत्ति**	**सुधार और संवाद का कोई प्रयास नहीं, केवल विनाश।**
49	**प्रमाण**	**हिदायत देने के लिए कोई तार्किक प्रक्रिया नहीं दी जाती।**
50	**प्रमाण**	**कुदरत को बिना किसी तर्क या भौतिक प्रमाण के विशेष रूप से दिखाया गया।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में केवल निंदा और दंड की अवधारणा है, जो न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती। भारतीय दर्शन में एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए सुधार, संवाद, और तर्क की आवश्यकता होती है। इन आयतों में व्यक्त की गई विशेषताएँ न्याय, समानता, और तर्कसंगतता के खिलाफ जाती हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 51:

आयत का अनुवाद:
 और मेरा आम हुक्म था कि ऐ (मेरे पैग़म्बर) पाक व पाकीज़ा चीज़ें खाओ और अच्छे अच्छे काम करो (क्योंकि) तुम जो कुछ करते हो मैं उससे बख़ूबी वाक़िफ हूँ।

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यहाँ आदेश दिया जा रहा है कि पाक और अच्छे काम किए जाएं।
2. **हेतु (Reason):**
   यह आदेश का कारण स्पष्ट किया गया है - "तुम जो कुछ करते हो, मैं उससे बख़ूबी वाक़िफ़ हूँ।"
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में, कोई भी आदेश उस व्यक्ति के कार्यों के आधार पर दिया जाता है, और उसके पीछे तर्क और न्यायसंगत कारण होना चाहिए।
4. **उपनया (Application):**
   यहाँ आदेश में न केवल कार्य की शुद्धता की बात की जा रही है, बल्कि यह भी कहा जा रहा है कि कार्यों की निगरानी और मूल्यांकन ईश्वर करते हैं। परंतु, यह एकतरफा और बिना किसी तर्क के आदेश है, क्योंकि इसमें अन्याय या भेदभाव की संभावना नहीं दिखाई जाती।
5. **निगमन (Conclusion):**
   इस आयत में हुक्म तो स्पष्ट है, लेकिन केवल आदेश और निगरानी के आधार पर कार्य करने का तर्कहीन रूप देखा जाता है।

आयत 52:

आयत का अनुवाद:
तुम सबका मज़हब एक ही मज़हब है और मैं तुम लोगों का परवरदिगार हूँ।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह कहा जा रहा है कि सभी लोगों का धर्म एक ही है।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका आधार यह है कि "मैं तुम लोगों का परवरदिगार हूँ", अर्थात ईश्वर की एकता को प्रस्तुत किया जा रहा है।

3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में विविधता को स्वीकार किया जाता है और यह माना जाता है कि प्रत्येक धर्म का अपना एक मार्ग है। इस आयत में यह निरंतरता की अवधारणा व्यक्त की जाती है, जबकि भारतीय विचारधारा में विभिन्न मार्गों और मतों का सम्मान किया जाता है।
4. **उपनया (Application):**
   इस आयत का तात्पर्य है कि एक धर्म या मान्यता को अन्य सभी मान्यताओं पर श्रेष्ठ माना जा रहा है, जो एकतंत्रीक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। जबकि भारतीय दर्शन में किसी एक धर्म को सर्वोत्तम नहीं माना जाता, बल्कि प्रत्येक मार्ग को एकता की ओर अग्रसर होने के रूप में देखा जाता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत एकतावादी दृष्टिकोण को दर्शाती है, जबकि भारतीय दर्शन में अनेकता में एकता की बात की जाती है, जो तर्क और मानवता के दृष्टिकोण से अधिक न्यायसंगत है।

आयत 53:

आयत का अनुवाद:
तो बस मुझी से डरते रहो फिर लोगों ने अपने काम (में एख़तिलाफ करके उस) को टुकड़े टुकड़े कर डाला हर गिरोह जो कुछ उसके पास है उसी में नेहाल नेहाल है।

चुना गया न्याय तत्व: विप्रतिपत्ति (Vipratipatti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि लोग अपने धर्म को टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं और फिर उसे टुकड़ों में विभाजित कर लेते हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह बताया जा रहा है कि लोग धर्म से बाहर जा रहे हैं और उसे टुकड़ों में बांट रहे हैं।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में एकता और विविधता दोनों की स्वीकार्यता है। यहाँ पर प्रत्येक व्यक्ति और समुदाय को अपने विश्वासों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता दी जाती है।

4. **उपनया (Application):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि लोगों ने धर्म को टुकड़ों में बांट लिया, जबकि भारतीय परंपराओं में हर व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता से मार्ग चुनने का अधिकार है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत एकरूपता और समानता की अवधारणा को बढ़ावा देती है, जबकि भारतीय दर्शन में वैविध्य और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व दिया गया है।

आयत 54:

आयत का अनुवाद:
तो *(ऐ रसूल)* तुम उन लोगों को उनकी ग़फलत में एक ख़ास वक़्त तक *(पड़ा)* छोड़ दो।

चुना गया न्याय तत्व: विप्रतिपत्ति (Vipratipatti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह कहा जा रहा है कि उन लोगों को कुछ समय के लिए उनके हाल पर छोड़ दिया जाए।
2. **हेतु (Reason):**
 यह समझाने के लिए कि लोग अपनी ग़फलत में ही बने रहें, ताकि वे खुद अपनी स्थिति को समझें।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में किसी को भी उसकी ग़फलत में छोड़ देने की बजाय, उसे समझाने और मार्गदर्शन देने की महत्वता दी जाती है।
4. **उपनया (Application):**
 यह आयत न केवल लोगों को ग़फलत में रहने की अनुमति देती है, बल्कि उन्हें सुधारने का प्रयास भी नहीं करती। भारतीय दर्शन में सुधार और मार्गदर्शन की सिफारिश की जाती है, न कि ग़फलत को बनाए रखने की।
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत सुधार की प्रक्रिया की बजाय स्थितियों को यथावत बनाए रखने का सुझाव देती है, जो न्यायसंगत नहीं है।

आयत 55:

आयत का अनुवाद:
क्या ये लोग ये ख़्याल करते हैं कि हम जो उन्हें माल और औलाद में तरक़्क़ी दे रहे हैं तो हम उनके साथ भलाईयाँ करने में जल्दी कर रहे हैं?

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि जो माल और औलाद की तरक्की होती है, वह कोई भलाई नहीं होती।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह है कि भलाई किसी बाहरी चीज़ से नहीं, बल्कि आत्मिक और मानसिक उन्नति से आती है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में, धन और सुख का मूल्य नहीं बल्कि आत्मा की शांति और सद्गति का मूल्य होता है।
4. **उपनया (Application):**
   इस आयत में बाहरी समृद्धि को भलाई के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जबकि भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार, भलाई आंतरिक शांति, संतुलन और सच्चे ज्ञान से होती है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत बाहरी समृद्धि को भलाई के रूप में दिखाती है, जबकि भारतीय दर्शन में आंतरिक समृद्धि और आत्मज्ञान को महत्वपूर्ण माना जाता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	**हेतु**	**आदेश का आधार केवल निगरानी है, कोई तार्किक कारण नहीं।**
52	**प्रमाण**	**एकतावादी दृष्टिकोण, विविधता की उपेक्षा।**
53	**विप्रतिपत्ति**	**ग़फलत में रहने का आग्रह, सुधार का प्रयास नहीं।**

54	**विप्रतिपत्ति**	**ग़फलत को बनाए रखने का सुझाव, सुधार की प्रक्रिया का अभाव।**
55	**हेतु**	**बाहरी समृद्धि को भलाई के रूप में दिखाना, आंतरिक शांति का अभाव।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में बाहरी समृद्धि और एकतावाद पर जोर दिया गया है, लेकिन आंतरिक शांति, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सुधार की प्रक्रिया की उपेक्षा की गई है। भारतीय दर्शन में तर्क, संवाद और सुधार को महत्वपूर्ण माना जाता है, जबकि इन आयतों में केवल आदेश, नियंत्रण और बाहरी परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 61:

आयत का अनुवाद:
यह लोग अलबत्ता नेकियों में जल्दी करते हैं और भलाई की तरफ (दूसरों से) लपक के आगे बढ़ जाते हैं।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि कुछ लोग नेकियों में जल्दी करते हैं और भलाई की ओर अग्रसर होते हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह बताया गया है कि वे सच्चे अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त होते हैं, जो एक सकारात्मक प्रवृत्ति की ओर इशारा करता है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में भी नेक कार्यों को जल्दी करना और भलाई के मार्ग में लिप्त होना प्रशंसा के योग्य माना जाता है, लेकिन यह केवल सच्चे और निष्कलंक कार्यों के लिए होना चाहिए, जो ध्यान और विचार से किए गए हों।

4. **उपनया (Application):**
   हालांकि यह आयत इस बुराई से बचने की ओर प्रेरित करती है, परंतु इसका कोई स्पष्ट तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है कि यह भलाई या नेकियाँ किस प्रकार से निर्धारित होती हैं और कितनी गहरी होती हैं।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत नेकियों की ओर प्रेरित करती है, लेकिन बिना स्पष्ट तर्क या आधार के, जिस पर लोग अपने कार्यों को माप सकें।

आयत 62:

आयत का अनुवाद:
और हम तो किसी शख़्स को उसकी क़ूवत से बढ़के तकलीफ देते ही नहीं और हमारे पास तो (लोगों के आमाल की) किताब है जो बिल्कुल ठीक (हाल बताती है) और उन लोगों की (ज़र्रा बराबर) हक़ तलफी नहीं की जाएगी।

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि कोई भी व्यक्ति अपनी क्षमता से अधिक दुख नहीं उठाएगा और उसके कार्यों का पूरी तरह से हिसाब दिया जाएगा।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह बताया गया है कि भगवान के पास हर किसी के कार्यों की पूरी जानकारी है और वह किसी की भी हक़तलफी नहीं करेगा।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह विचार मिलता है कि व्यक्ति के कर्मों का हिसाब आत्मा के द्वारा ही लिया जाता है। यह इस विचार से मेल खाता है कि व्यक्ति को उसके कर्मों का फल उसी के अनुसार मिलेगा।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत न्याय की सटीकता और ईश्वर के द्वारा पूर्ण निगरानी की बात करती है। यह विचार भारतीय न्यायशास्त्र से मेल खाता है, जो कहता है कि व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है।

5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत न्याय की अवधारणा को स्पष्ट करती है, जिसमें कोई भी व्यक्ति अपनी क्षमता से अधिक कष्ट नहीं पाएगा और उसके कर्मों का ठीक हिसाब होगा।

आयत 63:

आयत का अनुवाद:
उनके दिल उसकी तरफ से ग़फलत में पड़े हैं इसके अलावा उनके बहुत से आमाल हैं जिन्हें ये (बराबर किया करते हैं) और बाज़ नहीं आते।

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   इस आयत में यह कहा गया है कि कुछ लोग ग़फलत में पड़े रहते हैं और बहुत से बुरे कार्य करते रहते हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह बताया गया है कि उनके दिलों में ग़फलत है और वे अपने बुरे कार्यों से नहीं रुकते।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि अज्ञानता या ग़फलत ही व्यक्ति को उसके कर्मों के कुपरिणाम की ओर ले जाती है। इस आयत में इस बात की पुष्टि की जा रही है कि व्यक्ति को अपनी ग़फलत और अज्ञानता से बाहर निकलने की आवश्यकता है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत अज्ञानता के कारण उत्पन्न होने वाली ग़फलत को दर्शाती है, जो बुरे कर्मों का कारण बनती है। भारतीय दर्शन में शिक्षा और ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है, जो इस ग़फलत को दूर करने के लिए है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत ग़फलत और बुरे कर्मों के बीच के संबंध को स्पष्ट करती है, और इस पर जोर देती है कि ग़फलत से बाहर निकलने की आवश्यकता है।

आयत 64:

आयत का अनुवाद:
यहाँ तक कि जब हम उनके मालदारों को अज़ाब में गिरफ्तार करेंगे तो ये लोग वावैला करने लगेंगे।

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि जब ईश्वर किसी समुदाय के अमीरों को सजा देगा, तो वे शोर मचाएंगे।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह है कि वे तब यह समझेंगे कि उनकी स्थिति खराब हो गई है और वे खुद को बचाने के लिए शोर करेंगे।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में, किसी व्यक्ति को उसकी स्थिति के आधार पर ही दंड या पुरस्कार मिलते हैं, लेकिन जब यह दंड आता है तो व्यक्ति को अपनी गलतियों का एहसास होता है और वह पश्चाताप करता है।
4. **उपनया (Application):**
   यहाँ पर यह संकेत दिया गया है कि जब कोई व्यक्ति अपनी स्थिति से संकट में होता है, तो वह शोर मचाता है, जबकि भारतीय दर्शन में आत्म-निर्णय और आत्म-ध्यान के माध्यम से दोषों का सुधार किया जाता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत यह कहती है कि जब अज़ाब आता है तो लोग शोर मचाते हैं, परंतु भारतीय दर्शन में शांति, आत्म-निरीक्षण और सुधार की प्रक्रिया पर जोर दिया जाता है।

आयत 65:

आयत का अनुवाद:
***(उस वक़्त कहा जाएगा)* आज वावैला मत करो तुमको अब हमारी तरफ से मदद नहीं मिल सकती।**

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि जब अज़ाब आ जाएगा तो लोगों को कोई मदद नहीं मिलेगी।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह बताया गया है कि उन्होंने पहले ही अपने कर्मों को ठीक नहीं किया था और अब कोई शोर या मदद काम नहीं आएगी।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि कर्मों का परिणाम स्वाभाविक रूप से आता है, और जब व्यक्ति अपनी गलतियों का सुधार नहीं करता, तो उसे उसकी स्थिति के अनुसार ही फल मिलता है।
4. **उपनया (Application):**
   यहाँ पर इस बात को कहा जा रहा है कि अब कोई मदद नहीं मिलेगी, जो भारतीय दर्शन में कर्मफल के सिद्धांत से मेल खाता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत यह स्पष्ट करती है कि जब व्यक्ति अपनी गलतियों का सुधार नहीं करता, तो उसे उसके कर्मों का फल भोगना पड़ता है और अब कोई मदद नहीं मिल सकती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	प्रमाण	नेक कार्यों के लिए कोई स्पष्ट आधार या तर्क नहीं।
62	व्याप्ति	न्याय का सही पालन, परंतु कोई स्पष्ट मूल्यांकन प्रक्रिया नहीं।
63	हेतु	ग़फलत को रोकने का स्पष्ट मार्गदर्शन नहीं, केवल चेतावनी।
64	हेतु	व्यक्तियों को उनके कर्मों का परिणाम समझने का कोई स्पष्ट मार्ग नहीं।
65	व्याप्ति	कर्मफल के सिद्धांत का पालन, लेकिन सुधार का कोई स्पष्ट तरीका नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कर्मों के फल और न्याय की अवधारणा पर जोर दिया गया है, लेकिन सुधार और मार्गदर्शन की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से नहीं दर्शाया गया है। भारतीय दर्शन में सुधार और मार्गदर्शन पर अधिक ध्यान दिया जाता है, जबकि इन आयतों में केवल परिणामों का सामना करना और शोर मचाने का संकेत दिया गया है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 66:

आयत का अनुवाद:
जब हमारी आयतें तुम्हारे सामने पढ़ी जाती थीं तो तुम अकड़ते किस्सा कहते बकते हुए उनसे उलटे पाँव फिर जाते।

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत यह कहती है कि लोग जब भगवान की आयतों को सुनते हैं, तो वे अकड़कर और हठधर्मिता से उनका विरोध करते हैं।
2. **हेतु (Reason):**
 इसका कारण यह बताया गया है कि लोग उन आयतों को अस्वीकार करते हैं, जो उनके जीवन और आदतों से मेल नहीं खातीं।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि जब कोई व्यक्ति सत्य को न पहचानने की स्थिति में होता है, तो वह अपने अहंकार और मनोवृत्तियों के कारण उसे नकार देता है।
4. **उपनया (Application):**
 यह आयत बताती है कि जब सत्य सामने आता है, तो लोग अपने स्वार्थ और अहंकार के कारण उसे अस्वीकार कर देते हैं। यह भारतीय दर्शन के अनुसार भी सही है, क्योंकि यहाँ पर व्यक्ति के आत्म-ज्ञान और विचारशीलता की कमी को दर्शाया गया है।

5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत एक सामान्य मानवीय प्रवृत्ति की ओर इशारा करती है, जहाँ लोग सत्य का सामना करते हुए भी उसे नकार देते हैं, विशेषकर जब वह उनके स्वार्थों के खिलाफ होता है।

आयत 67:

आयत का अनुवाद:
 तो क्या उन लोगों ने *(हमारी)* **बात** *(कुरआन)* **पर ग़ौर नहीं किया।**

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 इस आयत में यह कहा गया है कि लोगों को कुरआन पर ध्यान देना चाहिए और उसमें निहित सत्य को समझने की कोशिश करनी चाहिए।
2. **हेतु (Reason):**
 यह सुझाव दिया गया है कि यदि लोग कुरआन की बातों पर ग़ौर करें, तो उन्हें उसके संदेश का सही अर्थ समझ में आ सकता है।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में यह विचार है कि किसी भी ग्रंथ या उपदेश को सही रूप से समझने के लिए उसमें गहरे ध्यान और अध्ययन की आवश्यकता होती है।
4. **उपनया (Application):**
 यह आयत सत्य को पहचानने और उसकी गहरी समझ प्राप्त करने के महत्व को रेखांकित करती है, जैसा कि भारतीय दर्शन में अध्ययन और ध्यान की प्रथा है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 इस आयत में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कुरआन पर ग़ौर करने से व्यक्ति उसके वास्तविक संदेश को समझ सकता है, जो भारतीय दर्शन के भी अनुरूप है।

आयत 68:

आयत का अनुवाद:
उनके पास कोई ऐसी नयी चीज़ आयी जो उनके अगले बाप दादाओं के पास नहीं आयी थी।

चुना गया न्याय तत्व: उदाहरण (Udaharana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि लोगों को सामने आई नयी चीज़ को स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि यह पहले की चीज़ों से अलग है।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह बताया गया है कि जब कोई नई और सच्ची बात आती है, तो उसे सिर्फ इसलिए नकारा नहीं करना चाहिए कि वह पुरानी परंपराओं से भिन्न है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह विचार किया गया है कि नए विचारों और सिद्धांतों को पुराने सिद्धांतों से अलग करके नकारने की बजाय, उन्हें समझने और परखने की आवश्यकता है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत इसी बात को उजागर करती है कि नया ज्ञान और उपदेश हमेशा पुरानी परंपराओं से भिन्न हो सकता है, और उसे ध्यान से समझना चाहिए।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत इस तथ्य को स्वीकार करती है कि परिवर्तन और नयापन कुछ नया लेकर आता है, जिसे समझने की आवश्यकता होती है, जो भारतीय दर्शन के भी अनुरूप है।

आयत 69:

आयत का अनुवाद:
या उन लोगों ने अपने रसूल ही को नहीं पहचाना तो इस वजह से इन्कार कर बैठे।

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि लोग इसलिए इंकार कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने अपने पैग़ाम्बर को पहचाना नहीं।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह बताया गया है कि यदि लोगों को सत्य और पैग़ाम्बर की पहचान होती, तो वे इन्कार नहीं करते।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति सत्य का सही रूप से अवलोकन करता है, तो वह उस पर विश्वास करेगा। यही विचार इस आयत में व्यक्त किया गया है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत इस तथ्य को दर्शाती है कि अगर लोग किसी सच्चे शिक्षक या विचारक को सही रूप में पहचानें, तो वे उनका विरोध नहीं करेंगे।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत सत्य की पहचान और उसे समझने की आवश्यकता को उजागर करती है, ताकि लोग उसका विरोध न करें।

आयत 70:

आयत का अनुवाद:
या कहते हैं कि इसको जुनून हो गया है *(हरगिज़ उसे जुनून नहीं)* बल्कि वह तो उनके पास हक़ बात लेकर आया है और उनमें के अक्सर हक़ बात से नफ़रत रखते हैं।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत कहती है कि लोग पैग़ाम्बर को नकारते हैं और उन पर आरोप लगाते हैं कि उन्हें जुनून हो गया है, जबकि वह तो सच्चाई लेकर आए हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह बताया गया है कि लोग अपनी आत्ममुग्धता या अहंकार के कारण सच्चाई से नफरत करते हैं और उसे नकारते हैं।

3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि जब किसी सच्चे शिक्षक के सामने सत्य रखा जाता है, तो वह उसे नकारने के बजाय समझने का प्रयास करता है। यह आयत इसी बात की पुष्टि करती है कि कुछ लोग अपने अहंकार के कारण सत्य से नफरत करते हैं।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत इस विचार को दर्शाती है कि सत्य के सामने आने पर कुछ लोग उसे नकारते हैं, क्योंकि वह उनके स्वार्थों और पूर्वाग्रहों के खिलाफ होता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत इस बात की पुष्टि करती है कि कुछ लोग सत्य को पहचानने से इंकार करते हैं और अपनी गलतफहमियों में फंसे रहते हैं।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
66	हेतु	लोग सत्य का विरोध करते हैं, लेकिन इसका कारण उनका अहंकार और आत्ममुग्धता है।
67	प्रमाण	कुरआन पर ग़ौर करने का सुझाव दिया गया, परंतु इसका कोई मार्गदर्शन या उपाय नहीं बताया गया।
68	उदाहरण	नया ज्ञान स्वीकार करना महत्वपूर्ण है, परंतु कोई विस्तृत तर्क या मार्गदर्शन नहीं दिया गया।
69	हेतु	सत्य की पहचान की आवश्यकता, लेकिन यह बात स्पष्ट रूप से नहीं बताई गई कि यह पहचान कैसे हो।
70	प्रमाण	लोग सच्चाई को नकारते हैं, लेकिन इसका कारण उनका स्वयं का अहंकार है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में यह कहा गया है कि लोग सत्य को नकारते हैं क्योंकि वे उसे समझने और पहचानने में असमर्थ होते हैं। यह आत्ममुग्धता और अहंकार का परिणाम है। भारतीय दर्शन में भी यह विचार मिलता है कि आत्मज्ञान और सत्य की पहचान के लिए व्यक्ति को स्वार्थ और पूर्वाग्रह से बाहर निकलने की आवश्यकता होती है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 71:

आयत का अनुवाद:
और अगर कहीं हक़ उनकी नफ़सियानी ख़्वाहिश की पैरवी करता है तो सारे आसमान व ज़मीन और जो लोग उनमें हैं (सबके सब) बरबाद हो जाते बल्कि हम तो उन्हीं के तज़किरे (जिब्राईल के वास्ते से) उनके पास लेकर आए तो ये लोग अपने ही तज़किरे से मुँह मोड़ते हैं।

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत यह कहती है कि यदि लोग अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं के अनुसार हक़ का अनुसरण करने लगे, तो यह पूरे ब्रह्मांड की व्यवस्था को नष्ट कर देगा।
2. **हेतु (Reason):**
 इसका कारण यह बताया गया है कि हक़ की सही राह छोड़ने से समाज और ब्रह्मांड की नैतिक और प्राकृतिक व्यवस्था प्रभावित हो जाती है।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में यह विचार है कि जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं के अनुसार जीवन जीता है, तो यह न केवल उसकी आत्मा, बल्कि पूरे समाज और संसार को असंतुलित करता है।
4. **उपनया (Application):**
 यह आयत यह संदेश देती है कि व्यक्तिगत इच्छाओं की बजाय सत्य और न्याय की राह पर चलना समाज और ब्रह्मांड की समृद्धि के लिए आवश्यक है।
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत यह संकेत करती है कि यदि लोग केवल अपनी इच्छाओं का पालन करें तो समाज और प्राकृतिक व्यवस्था का संतुलन बिगड़ सकता है, जो भारतीय दर्शन में भी मिलता है।

आयत 72:

आयत का अनुवाद:
(ऐ रसूल) क्या तुम उनसे (अपनी रिसालत की) कुछ उजरत माँगतें हो तो तुम्हारे परवरदिगार की उजरत उससे कही बेहतर है और वह तो सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   इस आयत में यह कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति भगवान के संदेश को स्वीकार करता है, तो उसे इसकी कोई भौतिक कीमत नहीं मांगनी चाहिए, क्योंकि भगवान की पुरस्कार व्यवस्था इससे कहीं बेहतर है।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह है कि भगवान का पुरस्कार न केवल स्थायी होता है, बल्कि वह सबसे श्रेष्ठ होता है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह विचार है कि सत्य और नैतिकता के रास्ते पर चलने से किसी भी भौतिक लाभ की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ईश्वर या धर्म का मार्ग व्यक्ति को अंतिम उद्देश्य की प्राप्ति करता है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत इस विचार को व्यक्त करती है कि आत्मिक और धार्मिक प्रयोजन के लिए भौतिक उजरत या पुरस्कार की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यह पूरी तरह से भगवान के हाथ में है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत ईश्वर के पुरस्कार की श्रेष्ठता और स्थायित्व को दर्शाती है, जो भारतीय दर्शन में भी पाया जाता है, जिसमें अंतिम उद्देश्य को पाने के लिए भौतिक चीजों से परे एक आत्मिक संतुलन और परम उद्देश्य की आवश्यकता होती है।

आयत 73:

आयत का अनुवाद:
और तुम तो यक़ीनन उनको सीधी राह की तरफ़ बुलाते हो।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि पैग़म्बर अपने अनुयायियों को सही और सीधी राह की ओर बुलाते हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह है कि पैग़म्बर का उद्देश्य सत्य और ईश्वर की ओर मार्गदर्शन करना है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह विचार है कि गुरु या आचार्य का कर्तव्य अपने शिष्यों को सही मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन करना है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत इस तथ्य को व्यक्त करती है कि सत्य की राह पर चलने के लिए मार्गदर्शन जरूरी होता है, जैसे भारतीय परंपरा में गुरु-शिष्य परंपरा है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत मार्गदर्शन के महत्व को रेखांकित करती है, जो भारतीय दर्शन और संस्कृति में गुरु के माध्यम से दी जाती है।

आयत 74:

आयत का अनुवाद:
और इसमें शक नहीं कि जो लोग आख़िरत पर इमान नहीं रखते वह सीधी राह से हटे हुए हैं।

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि जो लोग आख़िरत में विश्वास नहीं करते, वे सीधी राह से भटक जाते हैं।

2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह है कि आख़िरत पर विश्वास न करने वाले लोग नैतिक और धार्मिक दृष्टि से भटक जाते हैं।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह विचार है कि अगर व्यक्ति परमात्मा और जीवन के उद्देश्य में विश्वास नहीं करता, तो वह आध्यात्मिक और नैतिक रूप से भटक सकता है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत यह दिखाती है कि आध्यात्मिक मार्गदर्शन और धर्म में विश्वास जीवन को सही दिशा में चलाने के लिए आवश्यक है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत आख़िरत में विश्वास के महत्व को दर्शाती है, जो भारतीय दर्शन में भी आत्मज्ञान और परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

आयत 75:

आयत का अनुवाद:
और अगर हम उन पर तरस खायें और जो तकलीफें उनको (कुफ्र की वजह से) पहुँच रही हैं उन को दफ़ा कर दें तो यक़ीनन ये लोग (और भी) अपनी सरकशी पर अड़ जाए और भटकते फिरें।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि यदि ईश्वर इन लोगों पर तरस खाकर उनकी तकलीफें हटा देता है, तो ये लोग फिर भी अपनी गलत दिशा में चलते रहेंगे।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह है कि इन लोगों का मन में सच्चाई और भगवान के प्रति कोई सच्चा विश्वास नहीं है, इसलिए उन्हें किसी भी प्रकार की सहायता से मार्गदर्शन नहीं होगा।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह कहा गया है कि जब व्यक्ति अपने कर्मों और विचारों से अज्ञानी होता है, तो कोई बाहरी मदद उसे सही रास्ते पर नहीं ला सकती।

4. **उपनया (Application):**
   यह आयत यह दर्शाती है कि आत्मज्ञान और आस्था की कमी से व्यक्ति बार-बार गलत मार्ग पर चला जाता है, चाहे वह कितनी भी सहायता प्राप्त कर ले।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत सत्य और आत्मज्ञान की आवश्यकता को दर्शाती है, जो भारतीय दर्शन में भी केंद्रीय स्थान रखता है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	**हेतु**	**व्यक्तिगत इच्छाओं की पैरवी से समाज का संतुलन बिगड़ता है, यह भ्रामक रूप से सामान्यीकरण करता है।**
72	**प्रमाण**	**भौतिक पुरस्कारों की अपेक्षा से परे आध्यात्मिक पुरस्कार की श्रेष्ठता पर जोर दिया गया है।**
73	**प्रमाण**	**सीधी राह की ओर बुलाने का विचार भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा के अनुरूप है।**
74	**हेतु**	**आख़िरत पर विश्वास के बिना व्यक्ति भटकता है, यह एक सीमित दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है।**
75	**प्रमेय**	**बाहरी सहायता से सत्य की दिशा में नहीं लाया जा सकता, यह आत्मज्ञान की कमी को दर्शाता है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में यह कहा गया है कि व्यक्ति की सही दिशा में मार्गदर्शन केवल ईश्वर के सत्य के प्रति विश्वास और आत्मज्ञान से संभव है। भारतीय दर्शन में भी यही विचार है कि आध्यात्मिक मार्गदर्शन और सत्य की पहचान के बिना व्यक्ति भटक सकता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 71:

आयत का अनुवादः
और अगर कहीं हक़ उनकी नफ़सियानी ख़्वाहिश की पैरवी करता है तो सारे आसमान व ज़मीन और जो लोग उनमें हैं (सबके सब) बरबाद हो जाते बल्कि हम तो उन्हीं के तज़किरे (जिब्राईल के वास्ते से) उनके पास लेकर आए तो यह लोग अपने ही तज़किरे से मुँह मोड़ते हैं।

चुना गया न्याय तत्वः हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचनाः

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह दावा करती है कि अगर लोग अपनी नफ्सियानी इच्छाओं के अनुसार हक़ को छोड़ देंगे, तो इससे ब्रह्मांड की संपूर्ण व्यवस्था नष्ट हो जाएगी।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह है कि हक़ की सही राह पर चलने से ही ब्रह्मांड की नैतिक और भौतिक व्यवस्था स्थिर रहती है। यदि लोग अपनी इच्छाओं का पालन करते हैं, तो समाज और ब्रह्मांड का संतुलन बिगड़ सकता है।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह विचार मिलता है कि जब व्यक्ति केवल अपने व्यक्तिगत स्वार्थों का पालन करता है और सत्य के मार्ग से विचलित हो जाता है, तो यह न केवल उसके जीवन बल्कि समाज और ब्रह्मांड को भी असंतुलित कर सकता है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत यह सुझाव देती है कि अगर लोग सत्य के मार्ग से हटकर अपनी इच्छाओं का पालन करेंगे तो इससे नैतिक और भौतिक नुकसान होगा। यह भारतीय दर्शन में भी पाया जाता है, जहाँ पर "धर्म" या "सत्य" का पालन ब्रह्मांडीय संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक माना जाता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत यह संदेश देती है कि सत्य का पालन ब्रह्मांड की संपूर्ण व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक है, और यदि व्यक्ति अपनी इच्छाओं का पालन करता है तो इसका परिणाम समाज और ब्रह्मांड के लिए नकारात्मक हो सकता है।

आयत 72:

आयत का अनुवाद:
(ऐ रसूल) क्या तुम उनसे (अपनी रिसालत की) कुछ उजरत माँगतें हों तो तुम्हारे परवरदिगार की उजरत उससे कही बेहतर है और वह तो सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत यह कहती है कि अगर पैग़म्बर कोई पुरस्कार या उजरत नहीं मांगते हैं, तो इसका कारण यह है कि भगवान की उजरत उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ है।
2. **हेतु (Reason):**
 इसका कारण यह है कि ईश्वर का पुरस्कार स्थायी और सर्वोत्तम होता है।
3. **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में भी यह विचार मिलता है कि व्यक्ति को भौतिक पुरस्कारों या सुख-सुविधाओं के बजाय परमात्मा की कृपा और आशीर्वाद की प्राप्ति की कामना करनी चाहिए।
4. **उपनया (Application):**
 यह आयत यह संदेश देती है कि भौतिक पुरस्कारों से परे, आत्मिक उजरत और ईश्वर की कृपा सबसे श्रेष्ठ होती है। यह भारतीय दर्शन के "कर्म" सिद्धांत के अनुरूप है, जहाँ कार्य का उद्देश्य आत्मा की उन्नति होता है, न कि भौतिक लाभ।
5. **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत यह दिखाती है कि सत्य और धर्म के रास्ते पर चलने वाले व्यक्ति को भौतिक पुरस्कारों की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि ईश्वर का आशीर्वाद और उजरत उससे कहीं श्रेष्ठ है।

आयत 73:

आयत का अनुवाद:
और तुम तो यक़ीनन उनको सीधी राह की तरफ़ बुलाते हो।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि पैग़ाम्बर लोगों को सत्य और सीधी राह की ओर बुलाते हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह है कि सत्य और मार्गदर्शन का पालन करने से व्यक्ति का जीवन और समाज उन्नति की ओर बढ़ते हैं।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में भी यह विचार है कि गुरु का कार्य अपने शिष्यों को सत्य और आत्मज्ञान की ओर मार्गदर्शन करना है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत यह दर्शाती है कि पैग़ाम्बर के कार्य में सत्य की दिशा में लोगों को मार्गदर्शन करना है, जैसा कि भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य परंपरा में होता है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत सत्य की दिशा में मार्गदर्शन की आवश्यकता को रेखांकित करती है, जो भारतीय दर्शन में भी महत्वपूर्ण है।

आयत 74:

आयत का अनुवाद:
और इसमें शक नहीं कि जो लोग आख़िरत पर इमान नहीं रखते वह सीधी राह से हटे हुए हैं।

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि जो लोग आख़िरत पर विश्वास नहीं करते, वे गलत रास्ते पर हैं।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह बताया गया है कि आख़िरत पर विश्वास ही व्यक्ति को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह विचार है कि परमात्मा और आत्मा के उद्देश्य में विश्वास करने से ही व्यक्ति अपने जीवन को सही दिशा में निर्देशित कर सकता है।
4. **उपनया (Application):**
   यह आयत इस विचार को व्यक्त करती है कि आध्यात्मिक विश्वास व्यक्ति को सत्य की दिशा में मार्गदर्शन करता है। भारतीय दर्शन में भी यह विश्वास आत्मज्ञान और परमात्मा की प्राप्ति से संबंधित है।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत यह दर्शाती है कि अगर व्यक्ति आख़िरत पर विश्वास नहीं करता तो वह सही दिशा से भटक जाता है, जो भारतीय दर्शन में भी आत्मज्ञान के महत्व को स्पष्ट करता है।

आयत 75:

आयत का अनुवाद:
और अगर हम उन पर तरस खायें और जो तकलीफें उनको (कुफ्र की वजह से) पहुँच रही हैं उन को दफ़ा कर दें तो यक़ीनन ये लोग (और भी) अपनी सरकशी पर अड़ जाए और भटकते फिरें।

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

1. **प्रतिज्ञा (Proposition):**
   यह आयत यह कहती है कि अगर भगवान इन लोगों पर तरस खाकर उनकी तकलीफें हटा देता है, तो ये लोग और अधिक गलत रास्ते पर चलेंगे।
2. **हेतु (Reason):**
   इसका कारण यह है कि इन लोगों का स्वभाव ऐसा है कि चाहे उन्हें कितनी भी मदद दी जाए, वे फिर भी सही मार्ग पर नहीं लौटते।
3. **उदाहरण (Example):**
   भारतीय दर्शन में यह विचार है कि जब व्यक्ति अपनी कर्मों और विचारों में अज्ञानी होता है, तो बाहरी सहायता से वह सही रास्ते पर नहीं आ सकता।

4. **उपनया (Application):**
   यह आयत यह दर्शाती है कि जब व्यक्ति के पास आत्मज्ञान और ईश्वर की दिशा का सही मार्गदर्शन नहीं होता, तो वह बाहरी मदद से भी अपने भटकाव से बाहर नहीं आ सकता।
5. **निगमन (Conclusion):**
   यह आयत यह सिद्ध करती है कि सत्य के मार्ग पर चलने के लिए व्यक्ति का मानसिक और आध्यात्मिक रूप से तैयार होना आवश्यक है, और सिर्फ बाहरी सहायता से कोई परिवर्तन नहीं आता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
71	**हेतु**	**इच्छाओं का पालन समाज और ब्रह्मांड की व्यवस्था को नष्ट कर सकता है, यह एक संभावित निष्कर्ष है।**
72	**प्रमाण**	**भौतिक पुरस्कारों के बजाय ईश्वर के पुरस्कार की श्रेष्ठता को व्यक्त किया गया है, लेकिन यह व्यक्तिगत विचार हो सकता है।**
73	**प्रमाण**	**मार्गदर्शन का विचार भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा से मेल खाता है।**
74	**हेतु**	**आख़िरत पर विश्वास के बिना व्यक्ति भटकता है, यह एक तात्त्विक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण है, लेकिन यह सबके लिए लागू नहीं हो सकता।**
75	**प्रमेय**	**बाहरी मदद से सत्य की दिशा में बदलाव संभव नहीं होता, यह एक सतत आध्यात्मिक विचार है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में ईश्वर के मार्गदर्शन, आत्मज्ञान, और सत्य की राह पर चलने के महत्व को रेखांकित किया गया है। यह भारतीय दर्शन में पाए जाने वाले कर्म, मार्गदर्शन, और सत्य की दिशा में आत्मिक तत्परता से मेल खाता है, जो आध्यात्मिक विकास और समाज के संतुलन के लिए आवश्यक माना जाता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 75

आयत का अनुवाद: "और अगर हम उन पर तरस खायें और जो तकलीफें उनको (कुफ्र की वजह से) पहुँच रही हैं उन को दफअ कर दें तो यकीनन ये लोग (और भी) अपनी सरकशी पर अड़ जाए और भटकते फिरें।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)
यह आयत यह कहती है कि यदि काफिरों पर ईश्वर तरस खा कर उनके कष्टों को दूर कर दे, तो वे अपनी जिद्द और भटकाव में और बढ़ेंगे। यहाँ पर सत्य के निर्धारण के लिए कष्टों की आवश्यकता को सही ठहराया गया है।

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यदि ईश्वर काफिरों के कष्टों को दूर कर दे तो वे और अधिक सरकश होंगे।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि कष्टों को खत्म करना काफिरों के सुधार के लिए नहीं, बल्कि उनके भटकाव को और बढ़ाता है।
  यह तर्क मानवता के लिए अप्रामाणिक है क्योंकि किसी भी व्यक्ति की बुराई को उसके कष्टों से जोड़ना एक दोषपूर्ण तर्क है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन, विशेषत: भगवद गीता में कहा गया है कि कष्टों के माध्यम से मनुष्य अपने कर्मों के परिणामों को समझता है और फिर सुधारता है (गीता 3.16)। इस प्रकार, कष्टों का उद्देश्य हमेशा सुधार लाना होता है, न कि व्यक्ति को और अधिक बिगाड़ना।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत को गलत तरीके से लागू करती है। कष्टों का उद्देश्य सुधार के बजाय और अधिक पतन दिखाना गलत है। यह मानवता के लिए अप्रामाणिक है क्योंकि यह बताता है कि कष्ट का उद्देश्य किसी की सरकशी बढ़ाना है।

आयत 76

आयत का अनुवाद:
"और हमने उनको अज़ाब में गिरफ्तार किया तो भी वे लोग न तो अपने परवरदिगार के सामने झुके और गिड़गिड़ाएँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
यह आयत कहती है कि जब लोगों को सजा दी जाती है, तो वे कभी भी सुधार नहीं करते। यहाँ पर ईश्वर के द्वारा सजा देने का प्रमाण प्रस्तुत किया गया है।

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  लोग कभी भी ईश्वर के सामने झुके नहीं हैं, चाहे उन्हें कितनी भी सजा मिल जाए।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क बिना किसी प्रमाण के यह कहता है कि कष्टों के बावजूद सुधार संभव नहीं है।
  यह तर्क असंगत है क्योंकि वास्तविक जीवन में बहुत से लोग कष्टों और समस्याओं के माध्यम से अपने कर्मों को सुधारते हैं।

- **उदाहरण (Example):**
  मनुस्मृति (7.46) में कहा गया है कि बुराई करने वाले व्यक्ति को जब कष्ट होता है, तो वह उसे एक चेतावनी के रूप में समझ सकता है और फिर सुधार सकता है।
  इसके अलावा, भगवद गीता (18.66) में भी कहा गया है कि पापियों को उनके पापों का प्रायश्चित करने का अवसर दिया जाता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है। सजा के बाद सुधार की संभावना को नकारना गलत है। ईश्वर की कार्यविधि और मानवता में सुधार के प्रयास को समझने की आवश्यकता है।

आयत 77

आयत का अनुवादः
"यहाँ तक कि जब हमने उनके सामने एक सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल दिया तो उस वक़्त फौरन ये लोग बेआस होकर बैठ रहे।"

चुना गया न्याय तत्वः
हेतु (Reason)
यह आयत कहती है कि जब लोगों को सख़्त सजा दी जाती है, तो वे जवाब नहीं दे पाते और बैठ जाते हैं।

विश्लेषण और आलोचनाः

- प्रतिज्ञा (Proposition):
  सख़्त सजा से लोग अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी नहीं होते।
- हेतु (Reason):
  यह तर्क इस विचार पर आधारित है कि कष्ट या सजा के बाद कोई सुधार नहीं आता। यह वास्तविकता से मेल नहीं खाता क्योंकि कई बार व्यक्ति सजा के बाद अपने कर्मों में सुधार करता है।
- उदाहरण (Example):
  वैशेषिक दर्शन में कारण और परिणाम के सिद्धांत के तहत, किसी भी घटना का परिणाम उसके कारण से जुड़ा होता है। अगर किसी व्यक्ति को सजा दी जाती है, तो यह उसके कर्मों का परिणाम होता है और वह सुधारने के लिए प्रेरित हो सकता है।
- निगमन (Conclusion):
  यह आयत गलत तरीके से सजा के बाद सुधार की संभावना को नकारती है। यह तर्क असंगत है क्योंकि कई बार कष्टों से सीख कर सुधार होता है।

आयत 78

आयत का अनुवादः
"हालाँकि वही वह (मेहरबान ख़ुदा) है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल पैदा किये (मगर) तुम लोग हो ही बहुत कम शुक्र करने वाले।"

चुना गया न्याय तत्वः
प्रमेय (Prameya)
यह आयत बताती है कि मनुष्य के पास ईश्वर द्वारा दिए गए कई उपहार हैं, फिर भी वह उसका आभार व्यक्त नहीं करता।

विश्लेषण और आलोचनाः

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  मनुष्य अपने कृत्यों के लिए आभारी नहीं है, जबकि उसे ईश्वर ने कई उपहार दिए हैं।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क कहता है कि मनुष्य ने ईश्वर का आभार नहीं माना है, क्योंकि उसने केवल ईश्वर के दिये उपहारों का उपयोग किया है।
  यह तर्क सही नहीं है, क्योंकि व्यक्ति का आभार केवल प्रत्यक्ष रूप से नहीं बल्कि परोक्ष रूप से भी व्यक्त हो सकता है, जैसे कि वह अपने कर्मों में सुधार लाता है।

- **उदाहरण (Example):**
  भागवत गीता (9.22) में कहा गया है कि जो लोग आत्म-ज्ञान प्राप्त करते हैं, वे ईश्वर का आभार व्यक्त करते हैं और उनके कर्मों में बदलाव लाते हैं।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत को गलत तरीके से लागू करती है, क्योंकि आभार केवल दिखावे से नहीं, बल्कि व्यक्तित्व में बदलाव से भी व्यक्त किया जाता है।

आयत 79

आयत का अनुवाद:
"और वही वह (ख़ुदा) है जिसने तुम को रुए ज़मीन में (हर तरफ) फैला दिया और फिर (एक दिन) सब के सब उसी के सामने इकट्ठे किये जाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)
यह आयत कहती है कि सभी लोग अंततः एक दिन ईश्वर के सामने इकट्ठा होंगे, लेकिन इसका कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  सभी लोग एक दिन ईश्वर के सामने इकट्ठा होंगे।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क किया गया है कि सभी लोग ईश्वर के सामने इकट्ठा होंगे, लेकिन इसका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example):**
  वेदांत दर्शन में कहा गया है कि आत्मा का उद्देश्य मोक्ष है, और मोक्ष प्राप्ति के बाद आत्मा ईश्वर से मिलती है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है।

आयत 80

आयत का अनुवाद:
"और वही वह (ख़ुदा) है जो जिलाता और मारता है कि और रात दिन का फेर बदल भी उसी के एख़्तियार में है तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)
यह आयत यह कहती है कि ईश्वर की इच्छा से ही जीवन और मृत्यु होती है, और वह रात और दिन का फेर भी नियंत्रित करता है।

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  ईश्वर जीवन और मृत्यु का कर्ता है और रात और दिन का फेर भी उसी के नियंत्रण में है।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क जीवन और मृत्यु को केवल ईश्वर की इच्छा से जोड़ता है।
  हालांकि, न्याय दर्शन के अनुसार, जीवन और मृत्यु का कारण कर्म होता है, न कि केवल ईश्वर की इच्छा।
- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (2.27) में कहा गया है कि आत्मा जन्म और मृत्यु के चक्र में बंधी रहती है, और इसका कारण आत्मा के कर्म होते हैं।
- **निगमन (Conclusion

):**

यह आयत जीवन और मृत्यु को केवल ईश्वर की इच्छा से जोड़ने की कोशिश करती है, जो न्याय दर्शन और गीता के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
75	व्याप्ति	कष्टों का उद्देश्य सुधार नहीं, बल्कि और अधिक भटकाव है।
76	प्रमाण	सुधार की संभावना को नकारा गया है।
77	हेतु	सजा के बाद सुधार की संभावना नकारी गई है।
78	प्रमेय	आभार केवल दिखावे से नहीं, बल्कि व्यक्तित्व में बदलाव से व्यक्त होता है।
79	प्रमाण	प्रमाण के बिना सबका ईश्वर के सामने इकट्ठा होना सिद्ध नहीं होता।
80	हेतु	जीवन और मृत्यु केवल कर्मों से जुड़ी होती है, न कि केवल ईश्वर की इच्छा से।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कष्टों, सजा, जीवन और मृत्यु के विषय में सिद्धांतों का उपयोग किया गया है, जो न्याय दर्शन और हिंदू दर्शन के आधार पर गलत प्रतीत होते हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 81

आयत का अनुवाद: "इन बातों को समझें ख़ाक नहीं, बल्कि जो अगले लोग कहते आए वैसी ही बात ये भी कहने लगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  आयत का दावा है कि जो लोग पहले आए थे, उनकी बातें इस समुदाय ने बिना समझे दोहराई हैं।
- **हेतु (Reason):**
  इस तर्क में यह कहा गया है कि बिना समझे परंपरा का पालन गलत है। लेकिन इस तर्क का आधार सिर्फ आलोचना पर आधारित है, न कि इस बात के प्रमाण पर कि क्यों पुराने विचार गलत हैं।
- **उदाहरण (Example):**
  वेदांत में कहा गया है कि सत्य का आधार केवल प्रमाणों पर आधारित होता है, न कि परंपरा या बड़ों के विचारों पर।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक उचित तर्क नहीं प्रस्तुत करती कि क्यों पुराने विचार गलत हैं, और यह केवल परंपरा की आलोचना करती है। यह कोई वास्तविक प्रमाण नहीं प्रस्तुत करती कि पुराने विचारों में त्रुटि थी।

आयत 82

आयत का अनुवाद: "कि जब हम मर जाएँगे और (मरकर) मिट्टी (का ढेर) और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम फिर दोबारा (क़ब्रों से जिंदा करके) निकाले जाएँगे?"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में पुनर्जन्म या पुनर्जीवित होने की संभावना पर संदेह व्यक्त किया गया है।
- **हेतु (Reason):**
  यह सवाल उठाया गया है कि मृत व्यक्ति कब्र से कैसे जिंदा होंगे। यहां तर्क का अभाव है और यह सारा विचार केवल संदेह पर आधारित है।
- **उदाहरण (Example):**
  भगवद गीता (2.22) में कहा गया है कि आत्मा का कोई अंत नहीं होता और यह शरीर छोड़ने के बाद दूसरे शरीर में प्रवेश करती है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमेय के सिद्धांत के विपरीत है क्योंकि यह पुनर्जन्म के सिद्धांत को बिना किसी प्रमाण के नकारती है, जबकि हिंदू दर्शन में कर्मफल और पुनर्जन्म की अवधारणा स्थापित है।

आयत 83

आयत का अनुवाद: "इसका वायदा तो हमसे और हमसे पहले हमारे बाप दादाओं से भी (बार-बार) किया जा चुका है, ये तो बस सिर्फ अगले लोगों के ढकोसले हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि पुनर्जन्म का दावा सिर्फ एक झूठा ढकोसला है, जो पुराने समय से चला आ रहा है।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क नहीं प्रस्तुत करता कि क्यों पुनर्जन्म या जीवात्मा के पुनः जीवन में आने का वादा गलत है। यह सिर्फ आरोप लगाता है।
- **उदाहरण (Example):**
  वैशेषिक दर्शन में कहा गया है कि जीवात्मा का कभी न खत्म होने वाला चक्र है, और पुनर्जन्म के सिद्धांत का आधार कर्मफल है।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत बिना तर्क या प्रमाण के केवल आरोप लगाती है और इससे पुनर्जन्म के सिद्धांत का खंडन नहीं होता। यह अप्रमाणिक तर्क है।

- ### आयत 84 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना
- **आयत का अनुवाद:**
  "(ऐ रसूल) तुम कह दो कि भला अगर तुम लोग कुछ जानते हो (तो बताओ) ये ज़मीन और जो लोग इसमें हैं किस के हैं वह फ़ौरन जवाब देंगे ख़ुदा के।"
- **चुना गया न्याय तत्व:**
  प्रमेय (Prameya)
- ### विश्लेषण और आलोचना:
- **प्रतिज्ञा (Proposition):**

- इस आयत में यह दावा किया गया है कि यह ज़मीन और जो इसमें हैं, वे सब ख़ुदा के हैं। यह विचार ईश्वर के सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक होने की अवधारणा को प्रस्तुत करता है।
- **हेतु (Reason):**
- इस तर्क में यह कहा जा रहा है कि ईश्वर ही ज़मीन और उसमें रहनेवाले सभी प्राणियों का मालिक है। हालांकि, यह दावा बिना किसी तर्क या प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है, जो केवल विश्वास पर आधारित है।
- **उदाहरण (Example):**
- भारतीय दर्शन में वैशेषिक दर्शन के अनुसार, प्रत्येक पदार्थ और प्राणी की उत्पत्ति उसके गुणों और कारणों से होती है, जो केवल ईश्वर के स्वामित्व से नहीं जोड़ी जाती। यहाँ प्राकृतिक घटनाएँ, जैसे कारण और प्रभाव, का भी महत्व होता है।
- इसके अतिरिक्त, सांख्य दर्शन में कहा गया है कि ब्रह्माण्ड और जीवन के कार्य प्राकृतिक तत्त्वों के द्वारा संचालित होते हैं, न कि केवल ईश्वर के स्वामित्व से।
- **उपनय (Application):**
- यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय के सिद्धांत के खिलाफ जाती है क्योंकि यह दावा करती है कि सारा ब्रह्माण्ड केवल एक शक्ति के अधीन है, जबकि वास्तविकता में ब्रह्माण्ड के अस्तित्व और संचालन के लिए अनेक तात्त्विक कारण होते हैं। इस प्रकार यह बिना प्रमाण के एक एकल कारण (ईश्वर) के माध्यम से पूरी सृष्टि के स्वामित्व का दावा करती है।
- **निगमन (Conclusion):**
- इस आयत में प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन किया गया है, क्योंकि यह ब्रह्माण्ड के स्वामित्व का दावा केवल विश्वास और बिना प्रमाण के करती है। न्याय दर्शन के अनुसार किसी भी दावे को सत्य मानने के लिए उसे प्रमाण और तर्क के आधार पर प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जो इस आयत में अनुपस्थित है।

सारणी (आयत का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
84	प्रमेय	ब्रह्माण्ड और जीवन के स्वामित्व को बिना तर्क और प्रमाण के एकल शक्ति (ईश्वर) से जोड़ना।

- **समग्र निष्कर्ष:**
- **यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह दावा बिना किसी प्रमाण या तर्क के ब्रह्माण्ड और उसमें रहने वाले सभी प्राणियों का स्वामित्व केवल ईश्वर के अधीन मानती है। न्याय दर्शन के अनुसार किसी भी सत्य के निर्धारण के लिए इसे प्रमाण, तर्क और अनुभव के आधार पर प्रस्तुत करना चाहिए।**

आयत 85

आयत का अनुवाद: "तुम कह दो कि तो क्या तुम अब भी ग़ौर न करोगे?"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि लोग ग़ौर से सोचने और समझने के लिए तैयार नहीं हैं।
- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रमाण के सिद्धांत से मेल खाता है, क्योंकि यह चेतावनी देती है कि बिना सही ज्ञान के किसी विचार को स्वीकार नहीं करना चाहिए।
- **उदाहरण (Example):**
  न्याय दर्शन में कहा गया है कि किसी भी विचार को सही प्रमाण के बिना स्वीकार नहीं करना चाहिए।
- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का सही रूप से पालन करती है और लोगों को सही ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा देती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
81	हेतु	यह आयत केवल परंपरा की आलोचना करती है, बिना यह स्पष्ट किए कि

		क्यों पुराने विचार गलत थे।
82	प्रमेय	यह आयत पुनर्जन्म या पुनर्जीवन के सिद्धांत को बिना प्रमाण के नकारती है, जो भारतीय दर्शन में स्थापित है।
83	हेतु	यह आयत बिना तर्क के केवल पुनर्जन्म को ढकोसला कहती है।
84	प्रमाण	यह आयत पृथ्वी और उसके निवासियों का स्वामित्व ईश्वर का बताती है, जो प्रमाण से मेल खाती है।
85	प्रमाण	यह आयत प्रमाण के सिद्धांत को सही रूप से लागू करती है और लोगों को सही ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा देती है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में पुनर्जन्म, जीवन के चक्र और ईश्वर के स्वामित्व के सिद्धांतों पर विचार किया गया है। न्याय दर्शन के आधार पर, कुछ आयतों में तर्क और प्रमाण का अभाव है, जबकि कुछ आयतें प्रमाण और तर्क के सिद्धांतों के अनुसार सही हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 86
आयत का अनुवाद:
"तुम उनसे पूछो तो कि सातों आसमानों का मालिक और (इतने) बड़े अर्श का मालिक कौन है तो फ़ौरन जवाब देंगे कि (सब कुछ) ख़ुदा ही का है।"
चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
सातों आसमानों और अर्श (सिंहासन) का मालिक केवल ख़ुदा है।
हेतु (Reason):
यह आयत इस दावे को प्रस्तुत करती है कि सातों आसमानों और अर्श का मालिक ख़ुदा है, लेकिन इसका समर्थन करने के लिए कोई अनुभवजन्य प्रमाण या तार्किक आधार नहीं दिया गया है। यह विचार अवैज्ञानिक

और बिना तर्क के है।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में ब्रह्म, जो कि निराकार और अव्यक्त है, को संसार के सभी आयामों का संचालक माना गया है। फिर भी, ब्रह्म के अस्तित्व के लिए ध्यान और अनुभव की आवश्यकता होती है, न कि सिर्फ विश्वास पर निर्भर रहना।

निगमन (Conclusion):

यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय (ज्ञान का विषय) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है, न कि प्रमाण या अनुभव के आधार पर।

आयत 87

आयत का अनुवाद:

"अब तुम कहो तो क्या तुम अब भी (उससे) नहीं डरोगे?"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

किसी को डराने का उद्देश्य उसे उसके विश्वासों को बदलने के लिए प्रेरित करना है।

हेतु (Reason):

यह आयत इस तर्क को प्रस्तुत करती है कि यदि लोग ख़ुदा से नहीं डरते तो उन्हें डराने की जरूरत है। लेकिन यह तर्क सही नहीं है क्योंकि किसी के विश्वास को डर से बदलना न्यायसंगत या तर्कसंगत नहीं है।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अधिकार 3, श्लोक 35) कहती है कि कर्म के प्रति निष्कलंक विश्वास ही सही मार्ग है, जबकि भय से किसी के कर्म या विश्वास में कोई स्थायी परिवर्तन नहीं हो सकता।

निगमन (Conclusion):

यह आयत तर्क और न्याय के सिद्धांत के विपरीत है, क्योंकि यह व्यक्तिगत विश्वासों में परिवर्तन को डर से जोड़ती है, जो गलत है।

आयत 88

आयत का अनुवाद:

"तुम उनसे पूछो कि भला अगर तुम कुछ जानते हो तो बताओ कि वह कौन शख़्स है- जिसके एख़्तेयार में हर

चीज़ की बादशाहत है वह (जिसे चाहता है) पनाह देता है और उस (के अज़ाब) से पनाह नहीं दी जा सकती?"
चुना गया न्याय तत्व:
व्यास्पति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर के अधिकार में सभी चीज़ों की बादशाहत है।
हेतु (Reason):
यह आयत दावा करती है कि केवल ईश्वर के पास समस्त सृष्टि का नियंत्रण है, लेकिन यह दावा अनुभवजन्य प्रमाण या तार्किक रूप से असमर्थित है। भारतीय दर्शन में ब्रह्म का अधिकार निराकार और निरंतर प्रवृत्त रहता है, लेकिन यह कोई तात्त्विक सिद्धांत नहीं है कि हर चीज़ केवल एक व्यक्ति के हाथ में हो।
उदाहरण (Example):
न्याय दर्शन में सत्य और प्रमाण की अवधारणा है। सभी वस्तुओं और घटनाओं का कारण-कार्य संबंध तर्क और प्रमाण द्वारा प्रमाणित होता है, न कि केवल एक व्यक्ति के नियंत्रण से।
निगमन (Conclusion):
यह आयत न्याय दर्शन के सिद्धांत "व्याप्ति" का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना प्रमाण के यह मानती है कि हर चीज़ एक निश्चित शक्ति के नियंत्रण में है।

आयत 89
आयत का अनुवाद:
"तो ये लोग फ़ौरन बोल उठेंगे कि (सब एख़्तेयार) ख़ुदा ही को है- अब तुम कह दो कि तुम पर जादू कहाँ किया जाता है?"
चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
यह आयत यह दावा करती है कि लोग सच्चाई को स्वीकार करने के बजाय इसे जादू के रूप में प्रस्तुत करते हैं।
हेतु (Reason):
यह आयत इस तर्क पर आधारित है कि कोई जो विरोध करता है, वह उसे जादू के रूप में देखता है, लेकिन यह तर्क उपमान के सिद्धांत के अनुरूप नहीं है। जादू और तर्क के बीच स्पष्ट अंतर है, और किसी भी विरोधी

विचार को जादू के रूप में प्रस्तुत करना केवल कुत्सित मानसिकता को दर्शाता है।

उदाहरण (Example):

गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते हैं (अधिकार 16, श्लोक 16) कि द्वैत और भ्रम से मुक्त ज्ञान के बिना कोई आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता।

निगमन (Conclusion):

यह आयत उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह तर्क करती है कि किसी विरोध को केवल जादू के रूप में देखा जाए, जो गलत है।

आयत 90

आयत का अनुवाद:

"बात ये है कि हमने उनके पास हक़ बात पहुँचा दी और ये लोग यक़ीनन झूठे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

ईश्वर ने सत्य को उनके पास पहुंचा दिया है, और विरोध करने वाले झूठे हैं।

हेतु (Reason):

यह आयत इस तर्क पर आधारित है कि जो विरोध करते हैं, वे झूठे हैं, लेकिन यह तर्क बिना किसी प्रमाण या तार्किक विश्लेषण के है। सत्य का निर्धारण तर्क और प्रमाण के आधार पर किया जाना चाहिए, न कि केवल विश्वास या पूर्वाग्रह पर।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में सत्य की खोज को प्रमाण और तर्क से जोड़ा जाता है, न कि किसी मत के आधार पर।

निगमन (Conclusion):

यह आयत न्याय दर्शन के "हेतु" तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना किसी प्रमाण के दूसरों को झूठा ठहराती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत	चुना गया	मुख्य आलोचना

संख्या	तत्व	
86	प्रमेय	बिना प्रमाण के दावा किया गया है कि ख़ुदा का अधिकार है।
87	हेतु	विश्वास बदलने के लिए डर का प्रयोग अनुचित है।
88	व्याप्ति	दावा किया गया है कि हर चीज़ एक शक्ति के नियंत्रण में है, जो तार्किक रूप से असमर्थित है।
89	उपमान	विरोधी विचारों को जादू के रूप में प्रस्तुत करना उपयुक्त नहीं है।
90	हेतु	विरोधियों को बिना प्रमाण के झूठा ठहराया गया है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क और प्रमाण के बिना बिना किसी प्रमाण के ईश्वर के अधिकार, सत्य, और विरोधियों के बारे में तर्क प्रस्तुत किया गया है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार, ये दावे प्रमाण और तर्क से समर्थित नहीं हैं, जिससे इन आयतों को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाना तर्कसंगत नहीं लगता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 91

आयत का अनुवाद:

"न तो अल्लाह ने किसी को (अपना) बेटा बनाया है और न उसके साथ कोई और ख़ुदा है (अगर ऐसा होता) उस वक़्त हर ख़ुदा अपने अपने मख़लूक़ को लिए लिए फिरता और यक़ीनन एक दूसरे पर चढ़ाई करता (और ख़ूब जंग होती)।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

अल्लाह का कोई बेटा नहीं है और कोई दूसरा ख़ुदा नहीं है, क्योंकि ऐसा होने पर देवताओं के बीच संघर्ष होता।

हेतु (Reason):

यह आयत इस दावे को प्रस्तुत करती है कि अगर अल्लाह का कोई बेटा होता, तो अन्य देवताओं के बीच

युद्ध होता। हालांकि, यह तर्क केवल काल्पनिक परिदृश्य पर आधारित है और किसी प्रमाण या व्यावहारिक अनुभव से समर्थित नहीं है। यह विचार न्याय दर्शन के प्रमेय सिद्धांत से मेल नहीं खाता, क्योंकि कोई वास्तविक प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में ब्रह्म के निराकार रूप को समझने का प्रयास किया जाता है, जो किसी भी प्रकार के संघर्ष या द्वैत को स्वीकार नहीं करता। द्वैत के अस्तित्व से संबंधित तर्क केवल भ्रमित करते हैं, जैसा कि वेदांत के सिद्धांत में है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय (ज्ञान के विषय) के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसका दावा केवल काल्पनिक विचार पर आधारित है, न कि तर्क या प्रमाण पर।

आयत 92

आयत का अनुवाद:

"जो जो बाते ये लोग (ख़ुदा की निस्बत) बयान करते हैं उस से ख़ुदा पाक व पाकीज़ा है वह पोशीदा और हाज़िर (सबसे) ख़ुदा वाक़िफ है ग़रज़ वह उनके शिर्क से (बिल्कुल पाक और) बालातर है।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

ख़ुदा सभी शिर्क से पाक और ऊँचा है।

हेतु (Reason):

यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि ख़ुदा शिर्क से पूरी तरह पाक है, लेकिन यह किसी प्रकार के प्रमाण या तर्क का समर्थन नहीं करती। शिर्क का कोई वास्तविक प्रमाण नहीं दिया जाता, और यह केवल विश्वास पर आधारित है। न्याय दर्शन में, सत्य को प्रमाणों द्वारा सिद्ध करना आवश्यक है।

उदाहरण (Example):

वेदांत में ब्रह्म का सिद्धांत यह कहता है कि ब्रह्म सर्वव्यापक है और शिर्क या भेदभाव का कोई अस्तित्व नहीं है, क्योंकि ब्रह्म एकमात्र वास्तविकता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत न्याय दर्शन के "हेतु" तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना प्रमाण के शिर्क को नकारने का दावा करती है।

आयत 93

आयत का अनुवाद:

"(ऐ रसूल) तुम दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले जिस (अज़ाब) का तूने उनसे वायदा किया है अगर शायद तू मुझे दिखाए।"

चुना गया न्याय तत्व:

उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

ख़ुदा से दुआ करना इस बात का संकेत है कि उसके पास समस्त अधिकार और शक्ति है।

हेतु (Reason):

यह आयत कहती है कि पैग़म्बर को दुआ करनी चाहिए कि अगर ख़ुदा का वायदा पूरा होता है, तो वह अज़ाब दिखाए। हालांकि, यह दुआ करने की प्रक्रिया वास्तविकता या तर्क से नहीं जुड़ी है, बल्कि यह केवल विश्वास पर आधारित है।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में कर्म और उसके परिणामों के सिद्धांत के अनुसार, किसी को दुआ से ज़्यादा कर्म और ध्यान द्वारा ही उसके जीवन में बदलाव लाने का प्रयास करना चाहिए।

निगमन (Conclusion):

यह आयत उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल विश्वास पर आधारित है, जबकि न्याय दर्शन में तर्क और प्रमाण महत्वपूर्ण होते हैं।

आयत 94

आयत का अनुवाद:

"तो परवरदिगार मुझे उन ज़ालिम लोगों के हमराह न करना।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

ख़ुदा से यह प्रार्थना करना कि ज़ालिम लोगों के साथ न किया जाए, यह तर्कसंगत है।

हेतु (Reason):

यह आयत दुआ के रूप में एक नैतिक आग्रह प्रस्तुत करती है, लेकिन यह बिना किसी प्रमाण के केवल एक भावनात्मक प्रतिक्रिया है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे या प्रार्थना को प्रमाण से समर्थित होना चाहिए।

उदाहरण (Example):

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने बताया कि आत्मा अमर है और किसी भी प्रकार के दुख या जुल्म से उसकी अवस्था में परिवर्तन नहीं होता (अधिकार 2, श्लोक 14)।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह केवल भावना और विश्वास पर आधारित है, न कि प्रमाण पर।

आयत 95

आयत का अनुवाद:

"और (ऐ रसूल) हम यक़ीनन इस पर क़ादिर हैं कि जिस (अज़ाब) का हम उनसे वायदा करते हैं तुम्हें दिखा दें।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

ख़ुदा का क़ातिल अज़ाब अवश्य दिखाया जाएगा।

हेतु (Reason):

यह आयत इस तर्क को प्रस्तुत करती है कि ख़ुदा को अज़ाब दिखाने की पूर्ण शक्ति है, लेकिन यह तर्क बिना प्रमाण और व्यावहारिकता के है। भारतीय दर्शन में कर्म का सिद्धांत कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्म का फल मिलेगा, लेकिन यह कोई तात्त्विक और व्यावहारिक प्रक्रिया है।

उदाहरण (Example):

न्याय दर्शन के अनुसार, हर घटना का कोई कारण होना चाहिए और परिणाम कारण के अनुसार ही होते हैं। केवल ख़ुदा की इच्छा से किसी अज़ाब का निर्धारण तर्कसंगत नहीं है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह बिना कारण या प्रमाण के किसी घटना का दावा करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
91	प्रमेय	बिना प्रमाण के दावा कि अल्लाह का कोई बेटा नहीं है, केवल काल्पनिक आधार पर।
92	हेतु	बिना प्रमाण के शिर्क को नकारना।
93	उपमान	विश्वास पर आधारित दुआ, तर्क से अनजाना।
94	प्रमाण	बिना प्रमाण के ज़ालिमों के साथ न होने की दुआ।
95	व्याप्ति	बिना प्रमाण के अज़ाब दिखाने का दावा।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में ईश्वर की शक्ति और अन्य धार्मिक विचारों के बारे में कुछ दावे किए गए हैं, जो न्याय दर्शन के तर्क और प्रमाण के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इन आयतों में से अधिकांश तर्क और अनुभव के बजाय विश्वास और भावना पर आधारित हैं, और इनका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 96

आयत का अनुवाद:

"और बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहो जो निहायत अच्छी हो जो कुछ ये लोग (तुम्हारी निस्बत) बयान करते हैं उससे हम ख़ूब वाक़िफ हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

बुरी बात का जवाब अच्छी बात से देना उचित है।

हेतु (Reason):

यह आयत एक सामान्य नैतिक सिद्धांत को प्रस्तुत करती है कि बुरी बात का जवाब अच्छी बात से देना चाहिए, जो कि भारतीय दर्शन में भी सम्मानित है। हालांकि, इस आयत में किसी विशेष तर्क या प्रमाण का उल्लेख नहीं है, और यह केवल एक नैतिक व्यवहार को समझाती है।

उदाहरण (Example):

गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि जो शांतिपूर्ण और सौम्य रहता है, वही सही मार्ग पर चलता है (अध्याय 16, श्लोक 3)।

निगमन (Conclusion):

यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय तत्व से मेल खाती है क्योंकि यह एक सामान्य नैतिक विचार को प्रस्तुत करती है, जो तर्क और प्रमाण के बिना समझा जा सकता है।

आयत 97

आयत का अनुवाद:

"और (ये भी) दुआ करो कि ऐ मेरे पालने वाले मै शैतान के वसवसों से तेरी पनाह माँगता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

शैतान के वसवसों से बचने के लिए दुआ करना उचित है।

हेतु (Reason):

यह आयत शैतान के वसवसों से बचने के लिए दुआ करने का आग्रह करती है। हालांकि, इस विचार का आधार केवल विश्वास पर आधारित है, जबकि न्याय दर्शन में किसी भी तर्क को प्रमाण से समर्थित किया जाना चाहिए।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में शैतान या नकारात्मक शक्तियों के बजाय, आत्मा के शुद्धिकरण और ध्यान पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत न्याय दर्शन के "हेतु" तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह तर्क और प्रमाण के बजाय केवल विश्वास पर आधारित है।

आयत 98

आयत का अनुवादः

"और ऐ मेरे परवरदिगार इससे भी तेरी पनाह माँगता हूँ कि शयातीन मेरे पास आएँ।"

चुना गया न्याय तत्वः

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):

शैतान से बचने के लिए दुआ करना उचित है।

हेतु (Reason):

यह आयत शैतान से बचने के लिए दुआ करने का आग्रह करती है। यह विचार भारतीय दर्शन के अनुरूप है, लेकिन इसका प्रमाण या तर्क नहीं दिया जाता। न्याय दर्शन में किसी भी अवधारणा को प्रमाण से सत्यापित किया जाता है, जबकि यह दुआ केवल विश्वास पर आधारित है।

उदाहरण (Example):

वेदांत में आत्मा के शुद्धिकरण पर अधिक ध्यान दिया जाता है, और शैतान का अस्तित्व केवल प्रतीकात्मक रूप में ही समझा जाता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि शैतान से बचने के लिए दुआ का कोई प्रमाण नहीं दिया गया है।

आयत 99

आयत का अनुवादः

"(और कुफ़्फ़ार तो मानेगें नहीं) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी को मौत आयी तो कहने लगे परवरदिगार तू मुझे एक बार उस मुक़ाम (दुनिया) में छोड़ आया हूँ फिर वापस कर दे ताकि मै (अपकी दफ़ा) अच्छे अच्छे काम करूं।"

चुना गया न्याय तत्वः

अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):

कुफ़्फ़ार मृत्यु के बाद यह इच्छा करेंगे कि वे वापस आकर अच्छे काम करें।

हेतु (Reason):

यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि कुफ़्फ़ार मृत्यु के समय यह इच्छा करेंगे कि वे वापस आकर अच्छे काम करें। हालांकि, यह केवल एक अनुमान है और इसका कोई प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन में अनुमान पर आधारित किसी भी विचार को प्रमाण से सिद्ध किया जाना चाहिए।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में कर्म के सिद्धांत के अनुसार, जीवन के प्रत्येक कार्य का परिणाम उसके कर्मों पर आधारित होता है, और मृत्यु के बाद कोई परिवर्तन संभव नहीं है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत अनुमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह विचार केवल अनुमान पर आधारित है और इसका कोई तर्क या प्रमाण नहीं है।

आयत 100

आयत का अनुवादः

"(जवाब दिया जाएगा) हरगिज़ नहीं ये एक लग़ो बात है- जिसे वह बक रहा और उनके (मरने के) बाद (आलमे) बरज़ख़ है।"

चुना गया न्याय तत्वः

व्याप्ति (Invariable Concomitance)

विश्लेषण और आलोचनाः

प्रतिज्ञा (Proposition):

मृत्यु के बाद का जीवन निश्चित है और कोई वापसी संभव नहीं है।

हेतु (Reason):

यह आयत कहती है कि मृत्यु के बाद कोई वापसी नहीं हो सकती, क्योंकि यह जीवन का अंत है। हालांकि, यह विचार तर्क और प्रमाण के बजाय केवल विश्वास पर आधारित है। न्याय दर्शन में, मृत्यु के बाद के जीवन का प्रमाण किसी तर्क या व्यावहारिक अनुभव से दिया जाना चाहिए।

उदाहरण (Example):

न्याय दर्शन में, मृत्यु के बाद का जीवन सिद्धांत केवल कर्मफल के सिद्धांत से संबंधित है, और इस पर कोई भौतिक प्रमाण नहीं दिया जाता।

निगमन (Conclusion):

यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह विचार केवल विश्वास पर आधारित है, न कि प्रमाण या तर्क पर।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
96	प्रमेय	बुरी बात का जवाब अच्छी बात से देने का तर्क केवल नैतिक है, प्रमाणित नहीं।
97	हेतु	शैतान से बचने की दुआ केवल विश्वास पर आधारित है, प्रमाण नहीं।
98	प्रमेय	शैतान से बचने के लिए दुआ का कोई प्रमाण नहीं है।
99	अनुमान	मृत्यु के बाद अच्छे काम करने की इच्छा केवल अनुमान पर आधारित है।
100	व्याप्ति	मृत्यु के बाद वापसी की बात केवल विश्वास पर आधारित है, प्रमाण या तर्क नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में मृत्यु, शैतान, और दुआ पर आधारित विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जो न्याय दर्शन के तर्क और प्रमाण के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। इनमें से अधिकांश विचार केवल विश्वास और भावना पर आधारित हैं, और तर्क या प्रमाण से उनका समर्थन नहीं किया गया है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 101

आयत का अनुवाद:

"जहाँ क़ब्रों से उठाए जाएँगें (रहना होगा) फिर जिस वक़्त सूर फूँका जाएगा तो उस दिन न लोगों में क़राबत दारियाँ रहेगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

सूर फूँकने के बाद क़ब्रों से उठाए जाने के बाद कोई आपस में रिश्ते नहीं करेंगे।

हेतु (Reason):

यह आयत एक भविष्यवाणी प्रस्तुत करती है कि सूर फूँकने के बाद, लोग एक दूसरे से कोई संवाद नहीं करेंगे और रिश्ते समाप्त हो जाएंगे। यह विचार एक धार्मिक विश्वास है, लेकिन इसका कोई ऐतिहासिक या भौतिक प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन में किसी भी कथन को प्रमाण के माध्यम से सत्यापित किया जाना चाहिए।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धांत को कर्मफल के आधार पर समझा जाता है, न कि किसी अप्राकृतिक घटना से।

निगमन (Conclusion):

यह आयत न्याय दर्शन के प्रमेय तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह घटना केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई प्रमाण नहीं है।

आयत 102

आयत का अनुवाद:

"फिर जिन (के नेकियों) के पल्लें भारी होगें तो यही लोग कामयाब होंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

नेकियों के पल्ले भारी होने से लोग कामयाब होंगे।

हेतु (Reason):

यह आयत कर्मों के परिणाम के बारे में बात करती है, जहां नेकियों के पल्ले भारी होने से व्यक्ति को सफलता मिलेगी। यह विचार भारतीय दर्शन के कर्म के सिद्धांत के अनुरूप है। हालांकि, न्याय दर्शन में इस प्रकार के नैतिक विचारों को प्रमाण और तर्क के साथ सिद्ध किया जाना चाहिए, लेकिन यहाँ केवल एक धार्मिक विश्वास प्रस्तुत किया गया है।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अध्याय 3, श्लोक 35) में कर्म के महत्व पर जोर दिया गया है, जो इस सिद्धांत को बल देता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत न्याय दर्शन के "हेतु" तत्व का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसे प्रमाण और तर्क से सिद्ध किया जाना चाहिए था।

आयत 103

आयत का अनुवादः

"और जिन (के नेकियों) के पल्लें हल्के होंगें तो यही लोग हैं जिन्होंने अपना नुक़सान किया कि हमेशा जहन्नुम में रहेंगे।"

चुना गया न्याय तत्वः

प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

नेकियों के पल्ले हल्के होने पर व्यक्ति हमेशा जहन्नुम में रहेगा।

हेतु (Reason):

यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि जो व्यक्ति अपने अच्छे कर्मों में कमज़ोर होते हैं, वे हमेशा जहन्नुम में रहेंगे। हालांकि, यह विचार धर्मिक दृष्टिकोण से भरा हुआ है और इसका कोई प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन में इस प्रकार के विचारों को तर्क और प्रमाण से सत्यापित किया जाना चाहिए।

उदाहरण (Example):

वेदांत में यह कहा जाता है कि व्यक्ति का आत्मा शुद्धिकरण के आधार पर मोक्ष प्राप्त कर सकता है, और कर्मफल का सिद्धांत भी इसके अनुरूप होता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसे प्रमाण से सिद्ध नहीं किया गया है।

आयत 104

आयत का अनुवादः

"और (उनकी ये हालत होगी कि) जहन्नुम की आग उनके मुँह को झुलसा देगी और लोग मुँह बनाए हुए होगें।"

चुना गया न्याय तत्वः

अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

जिनका पाप अधिक होगा, उन्हें जहन्नुम की आग झुलसाएगी।

हेतु (Reason):

यह आयत एक अनुमान प्रस्तुत करती है कि पापियों को जहन्नुम की आग झुलसाएगी। हालांकि, इसका

कोई वैज्ञानिक या तार्किक प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन में किसी भी घटना को अनुमान से सत्यापित नहीं किया जा सकता।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में कर्मफल के सिद्धांत के अनुसार, पापियों को उनके कर्मों का परिणाम भुगतना होता है, लेकिन यह केवल कर्मों के आधार पर है, न कि किसी अलौकिक घटना पर।

निगमन (Conclusion):

यह आयत अनुमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि इसे कोई प्रमाण या तर्क से समर्थित नहीं किया गया है।

आयत 105

आयत का अनुवाद:

"(उस वक़्त हम पूछेंगें) क्या तुम्हारे सामने मेरी आयतें न पढ़ी गयीं थीं (ज़रुर पढ़ी गयी थीं) तो तुम उन्हें झुठलाया करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:

वृद्धि (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

क्या तुमने मेरी आयतें पढ़ीं और फिर उन्हें झूठा कहा?

हेतु (Reason):

यह आयत एक सीधा सवाल पूछती है कि क्या उन लोगों ने आयतें पढ़ी थीं और फिर उन्हें झूठा कहा था। यह विचार न्याय दर्शन के "वृद्धि" तत्व से मेल खाता है, क्योंकि यह पूरी सच्चाई को सामने लाने का प्रयास करता है।

उदाहरण (Example):

न्याय दर्शन में सत्य का पता चार प्रमाणों से लगाया जाता है: प्रत्यक्षा, अनुमान, उपमान और शब्द। यह आयत इन प्रमाणों के आधार पर सत्य की पुष्टि करने का आग्रह करती है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत "वृद्धि" के सिद्धांत के अनुरूप है क्योंकि यह सत्य को स्थापित करने का प्रयास करती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
101	प्रमाण	सूर फूँकने के बाद रिश्तों के समाप्त होने का दावा बिना प्रमाण के है।
102	हेतु	नेकियों के पल्ले भारी होने से सफलता का दावा तर्क के बिना किया गया है।
103	प्रमेय	नेकियों के पल्ले हल्के होने से जहन्नुम में रहने का दावा प्रमाण से समर्थित नहीं है।
104	अनुमान	जहन्नुम की आग से झुलसाने का अनुमान प्रमाण से बिना सिद्ध किया गया है।
105	वृद्धी	आयतों को झूठा मानने का सवाल सत्य की ओर इशारा करता है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में विभिन्न नैतिक और धार्मिक विचारों को प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के तर्क और प्रमाण के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते। विशेषकर, इन आयतों में जो दावे किए गए हैं, वे केवल विश्वास पर आधारित हैं और इनका कोई भौतिक प्रमाण या तर्क नहीं प्रस्तुत किया गया है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 106
आयत का अनुवाद:
"वह जवाब देंगे ऐ हमारे परवरदिगार, हमारी कम्बख़्ती ने हमें आज़माया और हम गुमराह लोग थे।"
चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
लोग यह स्वीकार करेंगे कि उनकी ग़लतियों और कमज़ोरी के कारण वे गुमराह हो गए।

हेतु (Reason):
यह आयत इस विचार को प्रस्तुत करती है कि व्यक्ति अपनी ग़लतियों का कारण खुद की कमज़ोरी और ग़लत रास्ते को मानते हैं। हालांकि, यह परिकल्पना केवल व्यक्तिगत विचार और आत्म-स्वीकृति पर आधारित है, इसके वैज्ञानिक या भौतिक प्रमाण की कोई स्पष्टता नहीं है।
उदाहरण (Example):
भारतीय दर्शन में आत्म-ज्ञान और अपने कर्मों की समीक्षा करने का विचार है, लेकिन यह केवल व्यक्तिगत अनुभव और निष्ठा पर निर्भर करता है, न कि बाहरी तथ्यों पर।
निगमन (Conclusion):
यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह ग़लतियों की स्वीकारोक्ति पर आधारित है, लेकिन इसका कोई बाह्य प्रमाण नहीं है।

आयत 107
आयत का अनुवाद:
"परवरदिगार, हमें अबकी बार इस जहन्नुम से निकाल दे, फिर अगर दोबारा हम ऐसा करें तो हम कुसूरवार होंगे।"
चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
लोग यह प्रार्थना करेंगे कि वे जहन्नुम से बाहर निकलने के बाद अगर फिर से ग़लती करें तो वे जिम्मेदार होंगे।
हेतु (Reason):
यह विचार दर्शाता है कि व्यक्ति को अपनी ग़लतियों के परिणाम स्वीकार करने चाहिए। यह तर्क कर्मफल के सिद्धांत से मेल खाता है, जो भारतीय दर्शन में प्रचलित है। हालांकि, इस विचार में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि यदि ग़लतियाँ दुबारा की जाती हैं तो क्या ईश्वर की कृपा के बावजूद व्यक्ति को दंड मिलेगा या नहीं।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्याय 9, श्लोक 22) में यह कहा गया है कि जो भगवान की शरण में आते हैं, वे अपने कर्मों के फल को स्वीकार करते हैं और ईश्वर उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
निगमन (Conclusion):
यह आयत कर्मफल के सिद्धांत के अनुरूप है, लेकिन यह बिना किसी स्पष्टत: निर्धारित तर्क के व्यक्ति के बाद के कर्मों का हिसाब लगाने की बात करती है।

आयत 108

आयत का अनुवादः

"ख़ुदा फरमाएगा दूर हो इसी में (तुमको रहना होगा) और (बस) मुझ से बात न करो।"

चुना गया न्याय तत्वः

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

ईश्वर उन लोगों से बात नहीं करेंगे जो उनकी बातों का विरोध करते हैं।

हेतु (Reason):

यह आयत कहती है कि जो लोग ग़लती करते हैं, उन्हें ईश्वर से बात करने का अवसर नहीं मिलेगा। यह विचार केवल विश्वास और अनुमान पर आधारित है, इसमें कोई भौतिक या तार्किक प्रमाण नहीं दिया गया है।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में भगवान से संवाद की अवधारणा को मुक्तिका दृष्टिकोण से देखा जाता है, जहां ईश्वर से मिलन और संवाद की संभावना हमेशा रहती है, चाहे व्यक्ति ग़लती करे या सही हो।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमाण (साक्ष्य) और तार्किक दृष्टिकोण के अनुरूप नहीं है, क्योंकि यह बिना किसी स्पष्ट प्रमाण या तर्क के, ईश्वर की निर्णयात्मक कार्रवाई का दावा करती है।

आयत 109

आयत का अनुवादः

"मेरे बन्दों में से एक गिरोह ऐसा भी था जो (बराबर) यह दुआ करता था कि ऐ हमारे पालने वाले, हम इमान लाए तो तू हमें बख्श दे और हम पर रहम कर, तू तो तमाम रहम करने वालों से बेहतर है।"

चुना गया न्याय तत्वः

उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

कुछ लोग ईश्वर से अपनी उद्धार की प्रार्थना करते हैं, और इसे भक्ति का सर्वोत्तम रूप मानते हैं।

हेतु (Reason):

यह आयत भक्ति की एक उच्चतम अवस्था को दर्शाती है, लेकिन यह केवल विश्वास और व्यक्तिगत

अनुभव पर आधारित है। यह विचार भारतीय दर्शन के भक्तिपंथ से मेल खाता है, लेकिन इसे सार्वभौमिक सिद्धांत के रूप में लागू करना तार्किक नहीं है।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अध्याय 9, श्लोक 22) में कहा गया है कि भगवान शरणागत वत्सल हैं, और हर व्यक्ति को अपनी भक्ति के अनुसार फल मिलता है। यह सिद्धांत भक्ति का व्यक्तिगत अनुभव है, लेकिन यह सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकता।

निगमन (Conclusion):

यह आयत उपमान के सिद्धांत के अनुसार भक्ति की सर्वोत्तम अवस्था को प्रस्तुत करती है, लेकिन इसका सार्वभौमिक सत्य से कोई संबंध नहीं है।

आयत 110

आयत का अनुवाद:

"तो तुम लोगों ने उन्हें मसख़रा बना लिया, यहाँ तक कि (गोया) उन लोगों ने तुमसे मेरी याद भुला दी और तुम उन पर (बराबर) हँसते रहे।"

चुना गया न्याय तत्व:

व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

लोगों ने ईश्वर के संदेशों का मज़ाक उड़ाया और उन्हें अनदेखा किया।

हेतु (Reason):

यह आयत सत्य के विरोध को दर्शाती है, लेकिन इसके प्रमाण या विश्लेषण का कोई तार्किक आधार नहीं है। सत्य को केवल उपहास या अन्यथा नहीं माना जा सकता।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में सत्य का प्रमाण हमेशा चार प्रमाणों (प्रत्यक्षा, अनुमान, उपमान, और शब्द) से प्राप्त किया जाता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत सत्य के निर्धारण को बिना प्रमाण के प्रस्तुत करती है, और "व्याप्ति" के सिद्धांत से मेल नहीं खाती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
106	प्रमेय	ग़लतियों की स्वीकारोक्ति पर आधारित, कोई बाह्य प्रमाण नहीं है।
107	हेतु	कर्मफल के सिद्धांत का पालन, लेकिन कोई स्पष्ट तर्क नहीं।
108	प्रमाण	ईश्वर की निर्णयात्मक कार्रवाई बिना साक्ष्य के।
109	उपमान	भक्ति का सर्वोत्तम रूप, लेकिन सार्वभौमिक सत्य नहीं हो सकता।
110	व्याप्ति	सत्य के निर्धारण के लिए बिना प्रमाण के विचार प्रस्तुत करना।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कुछ तर्कों को केवल विश्वास और व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ हैं। प्रमेय, प्रमाण, उपमान और व्याप्ति जैसे सिद्धांतों का उल्लंघन किया गया है, जिससे इन आयतों को सार्वभौमिक दृष्टिकोण से स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं प्रतीत होता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 111
आयत का अनुवाद:
"मैंने आज उन्हें उनके सब्र का अच्छा बदला दिया कि यही लोग अपनी (ख्वाहिश) मुराद को पहुँचने वाले हैं।"
चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर उन लोगों को उनकी सब्र (धैर्य) का अच्छा बदला देंगे।
हेतु (Reason):
यह आयत सब्र और उसके फल को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह केवल विश्वास और एक व्यक्तिगत अनुभव

पर आधारित है। भारतीय दर्शन में सब्र का महत्व है, लेकिन इसका वास्तविक फल हर व्यक्ति के अनुभव और कर्मों के आधार पर भिन्न हो सकता है।

उदाहरण (Example):

भगवद गीता (अध्याय 2, श्लोक 47) में कहा गया है कि कर्म का फल व्यक्ति के कर्मों पर निर्भर करता है, न कि केवल धैर्य पर।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह सब्र के बदले का दावा एक सार्वभौमिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण से बिना प्रमाण के करती है।

आयत 112

आयत का अनुवाद:

"फिर उनसे ख़ुदा पूछेगा कि तुम ज़मीन पर कितने बरस रहे?"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

ईश्वर पूछेंगे कि लोग ज़मीन पर कितने समय तक रहे।

हेतु (Reason):

यह विचार संसार के समय को आंकने का दावा करता है, लेकिन इसमें कोई अनुभवजन्य या भौतिक प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का प्रमाण या आधार सत्य से प्राप्त करना चाहिए।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में समय को चक्रवात के रूप में देखा जाता है, और इसका अनुभव व्यक्तिगत या सांस्कृतिक दृष्टिकोण से होता है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह बेतहाशा समय के परिमाण को तय करती है बिना किसी भौतिक प्रमाण के।

आयत 113

आयत का अनुवाद:

"वह कहेंगे (बरस कैसा), हम तो बस पूरा एक दिन रहे या एक दिन से भी कम।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
लोग यह कहेंगे कि उन्होंने ज़मीन पर एक दिन से भी कम समय बिताया।
हेतु (Reason):
यह विचार एक समय की अवधारणा को व्यक्त करता है जो काफी सापेक्ष है। यह विश्वास पर आधारित है कि व्यक्ति समय को अपनी सीमित धारणाओं से मापते हैं। लेकिन यह तर्क किसी सार्वभौमिक समय या भौतिक प्रमाण से मेल नहीं खाता।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्याय 11, श्लोक 32) में समय को निरंतरता और चक्रवात के रूप में देखा गया है, जिसे किसी एक व्यक्ति की दृष्टि से पूरी तरह मापना असंभव है।
निगमन (Conclusion):
यह आयत समय की सापेक्षता को दर्शाती है, लेकिन यह तर्क या प्रमाण से खाली है।

आयत 114
आयत का अनुवाद:
"तो तुम शुमार करने वालों से पूछ लो, ख़ुदा फरमाएगा बेशक तुम (ज़मीन में) बहुत ही कम ठहरे काश तुम (इतनी बात भी दुनिया में) समझे होते।"
चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
लोग अपनी छोटी अवधि को नहीं समझ पाते हैं।
हेतु (Reason):
यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह सभी लोगों के लिए एक सामान्य अनुभव को निर्धारित करती है, जबकि समय का अनुभव व्यक्तिवाद पर आधारित हो सकता है।
उदाहरण (Example):
भारतीय दर्शन में समय की अवधारणा व्यक्ति और संस्कृति के अनुसार भिन्न होती है। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियों में समय को लीनियर और कुछ में चक्रीय के रूप में देखा जाता है।

निगमन (Conclusion):
यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत के खिलाफ जाती है, क्योंकि यह सभी व्यक्तियों के लिए एक ही अनुभव की मान्यता देती है।

आयत 115
आयत का अनुवाद:
"तो क्या तुम ये ख़्याल करते हो कि हमने तुम्हें (यूँ ही) बेकार पैदा किया और ये कि तुम हमारे हुज़ूर में लौटा कर न लाए जाओगे?"
चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर का यह विश्वास है कि लोगों को बेकार नहीं बनाया गया और वे उसकी उपस्थिति में लौटेंगे।
हेतु (Reason):
यह आयत उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह किसी बाहरी अनुभव या साक्ष्य के बिना किसी सार्वभौमिक सत्य का दावा करती है।
उदाहरण (Example):
भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म और जीवन के उद्देश्य को समझने के लिए कर्मफल का सिद्धांत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह केवल आस्थाओं और व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होता है।
निगमन (Conclusion):
यह आयत उपमान के सिद्धांत के विपरीत जाती है क्योंकि यह विश्वास पर आधारित है और कोई ठोस प्रमाण नहीं देती है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
111	**प्रमेय**	**सब्र के बदले का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**
112	**प्रमाण**	**समय के परिमाण को बेतहाशा तय करना, बिना भौतिक प्रमाण के।**

113	**हेतु**	**समय की सापेक्षता को स्वीकार करना, लेकिन बिना सार्वभौमिक प्रमाण के।**
114	**व्याप्ति**	**सभी के लिए एक ही समय के अनुभव को लागू करना, जो असंभव है।**
115	**उपमान**	**विश्वास पर आधारित, कोई ठोस प्रमाण नहीं।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचारों का तर्क और प्रमाण से कोई संबंध नहीं है। प्रमेय, प्रमाण, व्याप्ति और उपमान के सिद्धांतों का उल्लंघन करते हुए, ये विचार विश्वास और व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हैं। इन आयतों को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार करने के लिए तर्कसंगत और प्रमाणित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 116
आयत का अनुवाद:
"तो ख़ुदा जो सच्चा बादशाह (हर चीज़ से) बरतर व आला है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वहीं) अर्शे बुज़ुर्ग का मालिक है।"
चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Object of Knowledge)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
ख़ुदा के अलावा कोई माबूद नहीं है और वह अर्शे बुज़ुर्ग का मालिक है।
हेतु (Reason):
यह आयत ख़ुदा की एकमात्रता और सर्वोच्चता का दावा करती है, लेकिन यह तर्क केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है और इसे प्रमाणित करने के लिए कोई भौतिक, ऐतिहासिक या वैज्ञानिक साक्ष्य नहीं है। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी सत्य या वस्तु का ज्ञान प्रमाण या अनुभव से प्राप्त करना चाहिए।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्याय 9, श्लोक 23) में भी कहा गया है कि ईश्वर केवल एक है, लेकिन यह तर्क व्यक्तिगत श्रद्धा और अनुभव के आधार पर होता है, और इसे सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित करने के लिए कोई

अनुभवजन्य आधार नहीं है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमेय के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यह एक सार्वभौमिक सत्य के रूप में ईश्वर की सर्वोच्चता को बिना किसी ठोस प्रमाण के प्रस्तुत करती है।

आयत 117

आयत का अनुवाद:

"और जो शख़्स ख़ुदा के साथ दूसरे माबूद की भी परसतिश करेगा, उसके पास इस शिर्क की कोई दलील तो है नहीं, तो बस उसका हिसाब (किताब) उसके परवरदिगार ही के पास होगा (मगर याद रहे कि कुफ़्फ़ार हरगिज़ फलाह पाने वाले नहीं)।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

प्रतिज्ञा (Proposition):

जो कोई ईश्वर के साथ शिर्क (अर्थात दूसरों की पूजा) करेगा, उसका हिसाब केवल ईश्वर के पास होगा।

हेतु (Reason):

यह आयत शिर्क के खिलाफ एक कड़ा तर्क प्रस्तुत करती है, लेकिन इसमें शिर्क के खिलाफ दलील या प्रमाण प्रस्तुत करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी वस्तु या स्थिति का प्रमाणित होना जरूरी है, और बिना प्रमाण के किसी भी दावे को सत्य नहीं माना जा सकता।

उदाहरण (Example):

भारतीय दर्शन में वैदिक धर्म में अनेक देवताओं की पूजा की जाती है, जो विभिन्न पहलुओं और सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रकार, शिर्क का विचार एक सांस्कृतिक और व्यक्तिगत विश्वास है।

निगमन (Conclusion):

यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह शिर्क के खिलाफ कोई तार्किक या अनुभवजन्य प्रमाण प्रस्तुत नहीं करती है और केवल विश्वास पर आधारित है।

आयत 118

आयत का अनुवाद:

"और (ऐ रसूल) तुम कह दो परवरदिगार तू (मेरी उम्मत को) बक्श दे और तरस खा और तू तो सब रहम करने वालों से बेहतर है।"

चुना गया न्याय तत्व:
उपमान (Comparison)

विश्लेषण और आलोचना:
प्रतिज्ञा (Proposition):
ईश्वर को सबसे अधिक रहम करने वाला माना गया है।
हेतु (Reason):
यह आयत ईश्वर की असीम दया और रहम की बात करती है, लेकिन इसका आधार केवल आस्था और विश्वास है, और इसे किसी ठोस उदाहरण या प्रमाण से समर्थित नहीं किया गया। न्याय दर्शन में उपमान का सिद्धांत तब मान्य होता है जब किसी वस्तु या विचार को एक समानता के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है।
उदाहरण (Example):
भगवद गीता (अध्याय 9, श्लोक 22) में भगवान श्री कृष्ण ने कहा कि वह सभी जीवों पर दया रखते हैं, लेकिन यह विचार केवल विश्वास पर आधारित है और इसे सार्वभौमिक रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
निगमन (Conclusion):
यह आयत उपमान के सिद्धांत का उल्लंघन करती है क्योंकि यह दया और रहम को केवल ईश्वर से जोड़ती है, जबकि अन्य व्यक्तियों और परिप्रेक्ष्य में भी यह गुण हो सकते हैं।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
116	**प्रमेय**	**ईश्वर की सर्वोच्चता का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**
117	**प्रमाण**	**शिर्क के खिलाफ दलील या प्रमाण की कमी है।**
118	**उपमान**	**ईश्वर की दया को केवल विश्वास से जोड़ना, कोई तर्कसंगत आधार नहीं।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत विचारों का आधार विश्वास और व्यक्तिगत आस्था है, लेकिन यह तर्क, प्रमाण और अनुभवजन्य साक्ष्य से परे हैं। प्रमेय, प्रमाण और उपमान के सिद्धांतों का उल्लंघन करते हुए, ये आयतें केवल

विश्वास के आधार पर ईश्वर की सर्वोच्चता, शिर्क और दया की अवधारणाओं को प्रस्तुत करती हैं। इन आयतों को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार करने के लिए प्रमाण और तर्क का होना आवश्यक है।